बाबाणिआं कहाणिआं

पुत सपुत करेन

ऐडीशन
2024

प्रबन्धक कमेटी, गुरुद्वारा साहिब
धन धन बाबा बुड्ढा जी
तेलीबांधा, रायपुर
छत्तीसगढ़

बाबाणिआं कहाणिआं

पुत सपुत करेन

ऐडीशन
2024

प्रबन्धक कमेटी, गुरुद्वारा साहिब
धन धन बाबा बुड्ढा जी
तेलीबांधा, रायपुर
छत्तीसगढ़

बाबाणियां कहाणियां

धन धन श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी के अंग 951 पर तीसरी नानक जोत गुरू अमर दास जी का राग रामकली में फुरमान है-

'बाबाणियां कहाणियां पुत सपुत करेन'

इस का अर्थ बिल्कुल स्पष्ट है कि पूर्ण गुरसिखों के जीवन की कहानियां पुत्रों को सपुत्र बना देती हैं। अगर भाव अर्थ पर विचार किया जाये तो सतगुरू जी और पुरातन कमाई वाले गुरसिखों की जीवन कथाओं से मिलने वाली शिक्षा पर अमल करने से एक आम श्रद्धावान सिख भी गुरमुख बन सकता है। इस पुस्तक 'बाबाणियां कहाणियां' में दी गई गुरसिख बाबाओं की जीवन कथाएं हमारे पतित होकर इधर-उघर भटक रहे बच्चों को शिक्षा देने के लिए आवश्यक हैं, क्योंकि कई-कई सालों से ही नहीं बल्कि कई-कई जन्मों से भटक रहे लोगों का जीवन कुछ समय में ही गुरू जी द्वारा मिले सच के उपदेश से केवल बदला ही नहीं बल्कि उन को गुरूघर के महान गुरसिख होने का सम्मान भी प्राप्त हुआ।

इस पुस्तक में वर्तमान काल (Present tence) का अधिक प्रयोग किया गया है। गुरू जी का सिखों के साथ संवाद और लोगों की आपस में हुई बातचीत से ऐसा प्रतीत होता है कि यह सब घटनाएं वर्तमान में ही घट रही हैं। जिस से साखी रौचक तो लगती ही है बल्कि इस को याद रखना भी आसान हो जाता है। यह पुस्तक केवल बच्चों के सिलेबस के लिए ही नही बल्कि बड़ों को भी इतिहास के साथ जोड़ने में भी सहायक सिद्ध होगी।

' सिंघ जी '

भाई भगीरथ जी

सन 1495-96 ई. का समय है। परम पिता गुरु नानक साहिब जी इस समय सुलतानपुर में अपनी बहन बेबे नानकी जी के पास बिराज रहे हैं। सुलतानपुर दिल्ली दरबार के आधीन आती एक बड़ी रियासत है। इस पर इस समय नवाब दौलत खान लोधी की हुकुमत है। गुरु नानक साहिब जी के जीजा जी {बहनोई} जिन का नाम जै राम जी है परन्तु सत्कार सहित उनको सभी भाईया जी कह कर पुकारते हैं। भाईया जै राम जी नवाब के सटाफ में उच्च अफसर के पद पर तैनात हैं। उन्हीं की सिफारिश पर नवाब ने अपने मोदीखाने का चॉर्ज गुरु नानक साहिब जी को दिया हुआ है।

मोदीखाने के इन्चॉर्ज को मोदी कहा जाता है। एक बहुत बड़ा भुलेखा है कि गुरु नानक साहिब जी की मोदीखाने की नौकरी को एक छोटी दुकान की नौकरी समझा जाता है क्योंकि मोदीखाने की साखी में सिर्फ तेरा तेरा तोलने का जिक्र बहुत प्रचलित है। असलीयत यह है कि उस समय के मोदी की पदवी आज के फाईनैंस सैकटरी और रैविन्यू सैकटरी से भी बड़ी थी। राशन और अन्य जिणसें जैसें गेहू, मक्की, चावल, ज्वार, बाजरा आदि तोलने के लिये तो गुरु जी को बहुत से कर्मचारी मिले हुये थे। उनका असली काम था, रियासत के आधीन आते परगनों, गांवों और शहरों के चौधरियों से मालीया {टैक्स} वसूल करके मोदीखाने में जमां करना, मालिये का हिस्सा दिल्ली दरबार को भेजना, लोगों की भलाई के कामों के लिये राशि का प्रबन्ध करना, उनका हिसाब रखना, नवाब के महलों और अहलकारों के घर राशन भेजना, पूरे सटाफ में तनख्वाह बांटना। यह काम उस समय बहुत कठिन था क्योंकि मालीये का सारा लेन देन जिणसों में ही करना पड़ता था। सटाफ को तनख्वाह भी कुछ नकद और कुछ जिणसों के रुप में दी जाती थी। ज़रूरत अनुसार व्यापारी लोग भी मोदीखाने से जिणसों को बेचते और खरीदते थे। मोदी को कई बार सरकारी कामों के लिये गांवों और नगरों में भी जाना पड़ता था।

मोदीखाने का प्रबन्ध गुरु साहिब जी ने बड़े सुचारु ढंग से सम्भाला हुआ है। सरकारी काम के लिये चौधरी, अहलकार एवं जनता गुरु नानक साहिब जी {मोदी } के पास आते रहते थे। गुरु जी अपने आधीन काम करने वाले कर्मचारी, जो जिणसें तोलते थे, उनसे सारा काम जल्दी और पूरे तोल आधीन करवा देते थे। सरकारी काम बहुत सुखदायी माहौल में चल रहा था। नवाब के आधीन काम करते चौघरी एवं अहलकार खुश हैं कि उन से मालीया ज्यादा नहीं लिया जाता। व्यापारी एवं सरकारी सटाफ खुश हैं कि उन को कम नहीं मिलता। गुरू जी से पहले हुये मोदियों के समय कम-ज्यादा, लेन-देन की रिश्वतखोरी चलती रहती थी। परन्तु गुरू जी ऐसा नहीं होने देते थे।

s

कुछ समय बाद गुरू साहिब जी ने तलवंडी से अपनी पत्नी माता सुलखणी जी और मरदाना जी को सुलतानपुर में बुला लिया। यहां भी गुरू जी ने सत्य का उपदेश देने के लिए और सच्चे परमात्मा से जाड़ने के लिए सत्संगत करनी शुरू कर दी। गुरू जी अमृत वेले उठते। सुलतानपुर के पास बहती वेंई नदी में स्नान करते। सूरज निकलने तक वेंई नदी के किनारे प्रभु भक्ति में लीन रहते। फिर मोदीखाने की डयूटी करते। खाली समय मिलता तो मोदीखाने के बाहर खुली जगह पर सत्संग करते। रात के समय अपने घर पर संगतों को उपदेश देते थे। आये हुये साधु-सन्तो के लिए लंगर का भी प्रबन्ध करते। यह गुरू साहिब जी का नित्य का नेम है। कई बार छुटटी के दौरान भी नज़दीक-नज़दीक के गांवों में प्रचार करने चले जाते।

सरकारी कामों के लिए लोग एवं मालीया आदि जमां करवाने के लिए आये चौधरी और अहलकार भी सत्संग में जुड़ बैठते। ऐसे ही संगत में एक दिन चौधरी भगीरथ भी बैठा है। भाई मरदाना जी ने रबाब छेड़ रखी है। गुरू साहिब जी सुन्दर मुखड़े से आसा राग में इलाही बाणी का उच्चारण कर रहें हैं:

पेवकड़ै धन खरी इआणी।। तिसु सह की मैं सार ना जाणी।।

सहु मेरा एकु दूजा नहीं कोई।। नदरि करे मेलावा होई।। रहाओ।। {पावन अंग 357}

चौधरी भगीरथ आज एक सरकारी अफसर {मोदी} के मुख से सच्चे प्रभु की सिफत {कीर्ति} सुनकर अजीब सी मस्ती में झूम रहा है। भगीरथ मलसींहां गांव का चौधरी है। यह गांव सुलतानपुर से 12-13 मील की दूरी पर बसा है। आमतौर पर चौधरी लोग अपने अमीरी ठाठ-बाठ के कारण खाने-पीने के शौकीन होते हैं। रंग-रस में मस्त रहते है, पर भगीरथ भला इन्सान है। यह इन्साफ पसन्द है। इस को मन की शांति की तलाश रहती है। धार्मिक प्रवर्ति होने के कारण लोगों की भलाई के कार्य भी करता रहता है। इसी कारण गांव में आये हुये साधू-सन्तों की सेवा भी करता है। 3-4 साल पहले एक जोगी इसको काली माता की मूर्ति दे गया है। तन्त्र-मन्त्र की युक्ति बताकर माता की पूजा करनी भी सिखा गया है। उस समय से चौधरी भगीरथ बताई युक्ति अनुसार माता की पूजा-अर्चना कर रहा है। किसी समय मन जुड़ भी जाता है, पर अधिकतर मन भटकता ही रहता है। आज हुए डेढ दो घंटे के सत्संग ने तो जैसे उसके हृदय को शीतलता प्रदान कर दी है। गुरू जी के मुख से सुने बोलों को वह बार-बार गुनगुना रहा है।

एक दिन गुरू नानक साहिब जी मरदाने को साथ लेकर मलसींहां गांव पहुंच जाते हैं। चौधरी भगीरथ को जब पता चला कि रियासत के मोदी साहिब दौरे पर आये हैं तो उसने अपने सेवादारों को मोदी साहिब की पूरी टहल सेवा करने का हुक्म दे दिया क्योंकि पहले हुये मोदी अपनी पूरी खुशामद करवाते थे। वह खुद आगे होकर गुरू जी को अपनी हवेली में ले आया। पर गुरू जी का यह सरकारी दौरा नहीं है। आज तो खेल कुछ और ही होना है। उन्होंने चौधरी को फुरमाया कि आज हम सरकार के नहीं बल्कि कुछ समय सच्ची सरकार के भाव परमात्मा के गुण गायन करेंगे। आज रात आपके गांव में सत्संग करने का विचार है हमारे मन में। इस लिए गांव में संदेशा भिजवा दीजिए कि रात को कीर्तन उपदेश होगा।

रात को संगत जुड़ गई। कीर्तन हुआ। लोगों को 'सत्य' का मार्ग अपनाने का उपदेश दिया गया। रात का विश्राम गुरू साहिब जी ने भगीरथ की हवेली में ही किया। अभी रात का एक पहर बाकी था, गुरू जी उठे। भगीरथ उनकी सेवा के लिए जाग ही रहा था। उस ने जल लाकर गुरू जी को स्नान करवाया। गुरू जी प्रभु भक्ति में लीन हो गये। उसी समय भगीरथ की नज़र एक स्त्री पर पड़ी जो झाड़ू लगा रही है। पहले तो चौधरी ने सोचा कि यह उसकी हवेली में सफाई करने वाली कोई दासी है। परन्तु जब उसका मुंह इस की तरफ हुआ तो उसने देखा कि यह तो वही देवी है जिस की वह पूजा करता है। पर फिर भी उसने भुलेखा दूर करने के लिए पूछा कि 'तू कौन है?' उसने कहा, 'चौधरी, मैं काली देवी हूं जिसकी तू आराधना करता हैं।' भगीरथ बहुत हैरानी

से बोला, 'तू तो जगत माता हैं। दुनियां तेरी पूजा करती है। तू यहां मेरी हवेली में झाड़ू क्यों लगा रही हैं? क्या मेरी आराधना सफल हुई है?' देवी ने उतर दिया, 'तेरी आराधना तो अभी मेरे नज़दीक भी नहीं, परन्तु आज जो तेरी हवेली में बिराज रहे हैं : गुरू नानक साहिब जी, वह परमेश्वर का रूप हैं। आप ही नारायण हैं। आप ही ब्रह्म हैं। मैं इन्हीं की सेवा करके शक्तिवान होती हूं, वही शक्ति मैं आगे बांट देती हूं।

इस अचम्भे को देख कर उसे भरोसा हो गया कि कलयुग में कल्याण की प्राप्ति गुरू नानक साहिब जी से ही हो सकती है। अपने इसी भरोसे के कारण चौधरी भगीरथ ने अब ज्यादा

समय सुलतानपुर में ही रहना शुरू कर दिया। वह सत्संग में जुड़ता है। सिमरन की बख्शिश गुरू जी ने कर दी हुई है। हर समय गुरू जी की सेवा में तत्पर रहता है। अमृत वेले उठता है। गुरू साहिब जी के साथ वेंई नदी पर जाता है। उनके वस्त्र ले जाता है। जब गुरू जी रस मग्न होते हैं, बिरती जोड़ लेते हैं तो वह भी स्नान करके थोड़ी दूर जाकर गुरू जी द्वारा मिले नाम का अभ्यास करता है। दिन संगतो की सेवा में व्यतीत करता है। मोदीखाने में भी गुरू जी के साथ ही जाता है। सरकारी काम-काज के बाद गुरू जी के पास ज़रूरतमंद आते हैं। गुरू जी सब की ज़रूरतें पूरी करते हैं। दुख दूर करते हैं। शरीर की खुराक के लिए राशन तो देते ही हैं, मन की खुराक के लिए नाम का उपदेश भी देते हैं। जब यहां सत्संग जुड़ता है तो भगीरथ जलपानी की सेवा करता है। गुरू साहिब जी की संगत, सेवा और सिमरन करता भगीरथ अब एक बेमिसाल सिख तैयार हो चुका है। गुरू साहिब जी एवं साथी लोग अब उसको भाई भगीरथ कह कर पुकारते हैं।

इन्हीं दिनों में गुरू जी के पास एक गरीब व्यक्ति अपनी विनती लेकर हाज़िर होता है। हाथ जोड़ कर अरज करता है,'पातशाह जी, मेरी बच्ची की सगाई हो चुकी है। लड़के वाले विवाह के लिए जल्दी कर रहे हैं। अन्यथा रिश्ता तोड़ने की बात कर रहे हैं। गरीब-निवाज, मैं अभी इस योग्य नहीं कि विवाह कर सकूं। आप जी मेहर करो, मेरी मदद करो ताकि लड़की का डोला उठ सके। गुरू साहिब जी ने संगत में नज़र भर कर देखा तो भाई भगीरथ पर नज़र टिक गई। गुरू जी बोले, 'भगीरथ जी, कागज़ लेकर इस सज्जन की सारी साम्रगी लिख लो। जेब भर लो रूपयों के साथ। लाहौर जाओ! विवाह का सारा सामान ला कर दो। एक बात का ध्यान रहे कि लाहौर में एक रात से ज्यादा नहीं रुकना। भाई भगीरथ ने सतबचन कह कर विवाह के सामान की लिस्ट बनाकर गुरू जी को दिखाई और जाने की आज्ञा ली। भाई भगीरथ लाहौर दो रातों का सफर करके पहुंचे। दो-तीन व्यक्तियों से बढ़िया दुकान के बारे में पूछ कर दुकान पर पहुंच जाते हैं। दुकान बहुत बड़ी है। व्यापारी का नाम है मनसुख। भाई भगीरथ और मनसुख की बात कुछ इस तरह होती है :-

भगीरथ: लो सज्जन जी, यह लो सामान की लिस्ट। यह सारा सामान तैयार कर दो, वस्तुएं हों बढ़िया। खर्चा हो कम। मूल्य हो एक। तुम भी खुश और मैं भी खुश।

मनसुख: सब कुछ आप की ज़रुरत अनुसार मिल जायेगा। जो सामान तैयार होना है, वह भी तैयार हो जायेगा। दो-तीन दिन आप हमारे पास ठहर जाओ।

उस समय बड़े नगरों में व्यापारियों ने दूर से आने वाले ग्राहकों के लिए रहने की जगह बनाई होती थी क्योंकि आने जाने के साधन विकसित नहीं होते थे। व्यापारी ग्राहकों के आर्डर का सामान दो-तीन दिनों में तैयार करवा देते थे। उतनी देर तक वह व्यापारी के महमान खाने (guest house) में ही ठहरते थे।

भगीरथ: सज्जन जी, मैं केवल एक रात ही लाहौर में रुक सकता हूं।

मनसुख: इतनी जल्दी मत करो। आप को यहां कोई तकलीफ नहीं होगी। खाना भी घर की रसोई से ही आ जायेगा।

भगीरथ: नहीं सज्जन जी, यह बात नहीं है, पर मैं एक रात से अधिक नहीं रह सकता।

मनसुख: अच्छा, मेरी एक सलाह मानो। आप को जल्दी है ना। हमारे पास एक रात ज्यादा रुक जाओ। समय तुम्हारा उतना ही लगेगा क्योंकि यहां से यक्के {तांगे} जाते हैं : मुलतानी घोड़ी वाले। रास्ते में उनके ठिकाने होते हैं, जहां से घोड़ियां और चालक बदल जाते हैं। इस तरह वह एक ही रात में सारा सफर तय कर लेते हैं। यह मैं इस लिए कह रहा हूं क्योंकि जो चूड़ा आप को चाहिए उसे तैयार करने में भी समय लगेगा।

भगीरथ: नहीं सज्जन जी, मुझे लाहौर में एक ही रात रुकने का हुक्म है।

मनसुख: क्या आप लोधी के नौकर हैं जो बार-बार एक ही रात रुकने की बात कर रहे हो।

भगीरथ: अगर नवाब का नौकर होता तो सौ बहाने बना देता। मेरा मालिक तो बहुत बड़ा हैं उनका हुक्म ना मानने से तो जन्म ही व्यर्थ हो जायेगा।

मनसुख: लोधी से बड़ा तो दिल्ली का तख्त है, पर आप तो सुलतानपुर से आये हो। दिल्ली वालों की नाफुरमानी तो तुम्हें सजा दे सकती है, परन्तु जन्म व्यर्थ कैसे?

भगीरथ: मेरा मालिक लोगों पर राज करने वाला नहीं, उनके दिलों पर राज करने वाला है। जन्म व्यर्थ इस करके कि जो सुख मुझे इस मालिक की आज्ञा मान कर प्राप्त हुआ है वह पूरा जन्म तप करके भी नहीं मिला। जब से अपने मन की मति को त्याग कर गुरू जी की मति को अपनाया है, उसी दिन से सुखी हुआ हूं। असल में मेरा जन्म ही तब से हुआ है।

मनसुख: मैं हैरान हो रहा हूं आप की बातें सुनकर। बल्कि परेशान भी हो रहा हूं। कलयुग में ऐसा कौन सा गुरु है, सुमति देने वाला। हर तरफ तो पाखंड पसरा हुआ है। सभी भ्रम जाल में फंसाने वाले ही मिलते हैं। जगह-जगह पर जाल बिछा रखे हैं इन पाखंडियों ने। मैं भी बहुत स्थानों पर भटका हूं, मुझे तो ऐसा कोई गुरू नहीं मिला।

भगीरथ: बिल्कुल सच कह रहे हो। पर मेरा गुरू आप परमेश्वर है। गोबिन्द खुद प्रकट होकर आया है इस धरती पर। है एक आम इन्सान, हमारे-तुम्हारे जैसा परन्तु जोत उस प्रभु की है जिसे मानते तो सभी हैं परन्तु देखा किसी ने नहीं। श्रद्धा के साथ देखोगे तो प्रत्यक्ष दिखेगा सब कुछ।

मनसुखः भाई भगीरथ जी, मैंने बहुत ठिकाने देखे हैं। बहुत धक्के भी खाये हैं। अगर श्रद्धा से ना देखूं परीक्षा लूं तो? क्या ऐसी करामात हो सकती है?

भगीरथः करामात, यह तो तुच्छ है वहां। यह कोई बड़ी बात नहीं। जो मैंने देखा है, वह मैंने बताना नहीं। इतना जरूर कहूंगा कि धर्म में परीक्षा लेना कोई अच्छी बात नहीं। परन्तु अगर आप की श्रद्धा इसी शर्त से बनती है तो मैं तुझे रोकता भी नहीं। मेरा गुरू तो पूरा है, जानता है सब के अन्दर की।

मनसुखः चलो। मैंने भी फैंसला कर लिया है। एक चूड़ा मेरे पास तैयार है। मैंने अपनी लड़की के लिए बनवा रखा है। यह मैं अपनी ओर से भेंट कर दूंगा। बाकी सामान सारा मिल जायेगा। कल दोपहर के बाद चल पड़ेंगे। आपकी प्रतिज्ञा भी पूरी हो जायेगी और मैं भी लाभ प्राप्त कर लूंगा। परन्तु परीक्षा तो मैं जरूर लेनी चाहूंगा, जो मैंने अभी से ही ठान ली है।

भगीरथ :बहुत अच्छी बात है।

दोनो में इस तरह बातचीत हुई। मनसुख ने अपना खाना भी दुकान पर ही मंगवा लिया और सन्देशा भेज दिया कि कुछ ज़रुरी सामान तैयार करवाने की वजह से आज मैं घर नहीं आ सकूंगा। सारे सामान की लिस्ट कर्मचारियों को देकर मनसुख और भगीरथ खाना खा कर इकट्ठे ही सो गये। सारी रात मनसुख को नींद नहीं आई। भाई भगीरथ के साथ हुई बातों में उसे सत्य नज़र आ रहा था। जिज्ञासा हो रही थी कि कब दिन चढ़े। सामान तैयार हो और चलें सुलतानपुर को। देखें गुरू जी की करामात को। भगीरथ के साथ हुई बातचीत से यह विश्वास होने लगा था कि मेरी प्रतिज्ञा तो पूरी हो ही जानी है। पहर रात रहती भाई भगीरथ उठे। सुलतानपुर की तरफ मुख करके 'धन गुरु नानक साहिब जी' उच्चारण किया। स्नान-पानी के बाद नित्य के नेम के अनुसार अपनी लिव जोड़ कर बैठ जाते हैं। मनसुख सब कुछ देख रहा है। कुछ देर बाद वह भी उठता है। अपना नेम करने के बाद वह दुकान पर सामान इकट्ठा करने में जुट जाता है। उसकी इच्छा इतनी बढ़ चुकी है कि दिन चढ़ने तक सारा सामान तैयार करवा लिया। चूड़ा वह घर से ले आया है। दुकान का सारा काम मुनीमों को समझा दिया है। दोपहर से पहले ही सारा सामान तांगे पर लाद कर चल पड़े। रास्ते में मनसुख ने बातचीत का सिलसिला इस तरह शुरू कियाः

मनसुखः मेरी इच्छा है कि मुझे ऐसा गुरू मिले जिसका जीवन पवित्र हो। मोह-माया के प्रभाव से दूर हो। केवल परमात्मा के साथ जोड़े। गुरू नानक साहिब जी कैसे हैं?

भगीरथः मनसुख जी, तलाश तो आपकी पूरी हो गई समझो। गुरू नानक साहिब जी खुद किरत करते हैं। गृहस्थी हैं, पर मोह नहीं। पदार्थ कमाते हैं, पर लोभ नहीं। नवाब का

मोदीखाना चलाते हैं, पर हौंमैं नहीं। सारा दिन काम करते हैं पर जुड़े रहते हैं : हर समय प्रभु के साथ। मोदीखाने का काम करने के लिये कई कर्मचारी मिले हुए हैं। दो सेवादार भी हैं। तीन सामान तोलने वाले भी हैं। फिर भी कभी-कभी मौज में आकर अपनी गद्दी छोड़ कर आप ही तोलने लग जाते हैं। कई बार मैंने स्वंय देखा है कि तोलते-तोलते जब तेरह {13} पर आ जाते हैं तो तेरा-तेरा-तेरा कर तोलते ही रहते हैं। कई बार नवाब के पास शिकायत पहुंच चुकी है कि नानक मोदीखाना लुटा रहा है। पर जब कभी भी चैकिंग हुई तो सारा माल नकदी ठीक निकलती है बल्कि गुरू जी की राशि ही नवाब की तरफ ज्यादा निकलती है। बरकत है इलाही उनके हाथों में। जिस के सिर पर हाथ रख देते हैं, उसका भाग्य चमक उठता है।

मनसुख: हम असली नुक्ते पर आते हैं, परमात्मा को प्राप्त करने का कौन सा मार्ग बताते हैं?

भगीरथ: एक बार गुरू जी फुरमा रहे थेः किरत करो। नाम जपो। बांट कर खाओ। यह तीनो काम हौंमैं {अहंकार} को दूर कर देते हैं। हौंमैं में ही प्रभु-प्राप्ति की युक्ति का बीज है जिस को नाम रूपी पानी डाल कर पौधा बना लेते हैं। इधर पौधा उगा, मैं मेरी खत्म हुई, उधर प्रभु के घर का द्वार खुला। बस करो दर्शन जी भर-भर कर।

मनसुख: सज्जन जी, मुझे इस तरह लग रहा है कि मैं भी अब पूरे गुरू के पास ही हूं। पर मेरा मन परीक्षा लेने के लिए फिर भी उतावला है।

भगीरथ: जैसी आप की इच्छा। परन्तु पूरी होगी तब, जब होगी गुरू जी की इच्छा।

इस तरह बातचीत करते हुए वह सुलतानपुर पहुंच गये। दोपहर का समय है। सरकारी काम समाप्त हो चुका है। गुरू नानक साहिब जी गद्दी से उठकर सत्संग में आकर बैठ गये हैं। भाई मरदाना जी कीर्तन कर रहे हैं। भाई भगीरथ और मनसुख भी नमस्कार करके बैठ जाते हैं। शब्द की समाप्ति होती है। दोनो हाथ जोड़ कर अभी खड़े ही हुए थे कि गुरू जी मुस्करा कर बोले,'आ भाई भगीरथ, तू तो चंदन का पेड़ निकला। अन्य पेड़ों को भी चंदन बनाने वाला। हमने तो तुझे विवाह का सामान लेने के लिए भेजा था परन्तु तू तो व्यापारी को ही बिहा कर ले आया।' फिर मनसुख की तरफ नज़र भर कर बोले, 'आ भाई, 'मन' का 'सुख' ढूंढने के लिए आया हैं। तूने तो नाम ही मनसुख रखा हुआ है। घबरा मत, अब मन सुखी ही रहेगा। भाई भगीरथ ने तेरे 'कच्च' को 'पक्क' का राह दिखाया है।

गुरू नानक साहिब जी के मुख से यह बोल सुनकर मनसुख की आंखों में से आंसू टपकने लगे। मनसुख ने मन में यही तो धार रखा था कि अगर गुरू जी जाते ही मुझे मेरा नाम

लेकर पुकारेंगे तो वह पूरे गुरू होंगे। मनसुख की सारी उम्र के तलाश खत्म हुई। आंसू बहते रहे। उसको पता ही नहीं चला कि कब उसने गुरू साहिब जी के चरणों पर सिर रख दिया। कब गुरू साहिब जी ने अपने पवित्र हाथों से उसे उठा लिया। काफी समय तक वैराग्य की हालत बनी रही। जब मनसुख कुछ शांत हुआ तब भाई भगीरथ ने बोलना शुरू किया, 'गुरू जी, यह पौधा तो मैंने नहीं लगाया। यह तो केवल आप जी के एक हुक्म 'लाहौर में एक ही रात रुकना ' ने लगाया है। बस आप के इस 'हुक्म' ने इसकी इच्छा इतनी बढ़ा दी कि यह आप जी के बारे में मुझ से बातें सुनने लगा। आप जी के 'सत्य' के मार्ग की प्रंशसा सुन-सुन कर इस के मन में आप जी के दर्शनों की इच्छा पैदा हो गई। गुरू जी, यह विवाह का सारा सामान तो खरीदा है, परन्तु चूड़ा मनसुख अपनी तरफ से 'भेंट' के रूप में लाया है।

गुरू जी ने जरूरतमंद प्रेमी को बुला कर सारा सामान पकड़ा कर कहा, 'ले भाई, अपने सिर से फर्ज़ उतार। उतना देना कि पीछे परिवार के गुज़रान के लिए बच जाये। लोक-लाज में आ कर ज्यादा खर्चा ना कर देना।

भाई मनसुख द्वारा ली हुई परीक्षा पूरी हो चुकी थी। जिस 'सत्य' की उसको तलाश थी वह मिल चुका था। अब वह घर नहीं गया। अब तो वह भाई भगीरथ के साथ ही गुरू साहिब जी की शरण में था। हर समय संगतों की सेवा के लिए तैयार रहता। लाहौर में सिखी के प्रचार के लिए एक हीरा तैयार होना शुरू हो चुका था। एक दिन गुरू साहिब जी ने भाई भगीरथ को हुक्म दिया कि अपने नगर में जाओ। वंहा रह कर भक्ति करो। सत्संग लगाओ। जरूरतमंदो की सहायता करो। सिखी के और पौधे लगाओ। भाई भगीरथ गुरू साहिब जी से बिछुड़ना नहीं चाहता था पर हुक्म की अवज्ञा भी नहीं कर सकता था। गुरू साहिब जी का हुक्म सिर माथे पर मानकर अपने गांव चला गया। जब कभी बिरह का जोर पड़ता तो गुरू साहिब जी के दर्शनों के लिए आ जाता था।

प्यार के साथ बोलो जी :

धन गुरू नानक देव साहिब जी।

धन भाई भगीरथ जी।

****

भाई मंझ जी

'मंझ' चन्द्रवंशी राजपूतों की एक गोत है। जालंधर और होशियार पुर के कई गांवों में इस गोत के लोग आज भी मिल जाते हैं। जिला होशियार पुर में एक गांव है 'कंगमाई'। भाई मंझ जी इस गांव में रहते थे। भाई मंझ जी का असली नाम 'तीरथ' है। गांव के लोग तीरथा कह कर बुलाते हैं। इनका परिवार खानदानी चौधरियों का परिवार है। जब तीरथा 15-16 साल का हुआ तो इसकी सगाई जिस लड़की के साथ हुई, उनका परिवार निगाहे वाले पीर सखी सरवर को मानने वाला था। वह पीर के आगू भक्तों में से थे। बहुत अमीर परिवार था। राज-दरबार तक उनकी पहुंच है। सगाई के समय उन्होंने यह शर्त रखी कि तीरथ भी सखी सरवर का भक्त बनेगा। घर में पीर की कब्र भी बनाई जायेगी। तीरथ के परिवार ने बड़े घर में रिश्ता जुड़ने की वजह से उनकी यह बात मान ली।

तीरथे का विवाह हो गया। पूरे सगनों के साथ चौधरानी को घर लाया गया। सम्बन्धियों ने 'निगाहे' {पाकिस्तान में डेरा गाज़ीखान के पास निगाहा एक शहर है, जिस में सखी सरवरियों के मुखी पीर सैयद अहमद शाह की समाधि बनी हुई है। यह इनका दूसरा मुख्य स्थान है।} से पीर की समाधि से मिट्टी ला कर तीरथे के घर के आंगन के बीच में कब्र बनाई। 'निगाहे' से आये भिराइओं {पीर के पुजारियों } ने पूजा की। पीर के उस्तति के गीत पढ़े गये। सारे गांव को भंडारे का न्यौता दिया गया। मीठे चावलों का 'यज्ञ' भी किया गया। सवा-सवा मन के पांच रोट चढ़ाये गये, जो प्रशाद के रूप में सारे गांव में बांटे गये।

नया-नया उत्साह। जवानी का जोश। तीरथे ने आप भी ढोल बजाना सीखा। हर वीरवार तीरथा खुद ही घर में ढोल बजाता। खुद ही पीर की उस्तति के गीत गाता। चौधरी होने के कारण उसकी इतनी चढ़त है कि 20-30 लोग हर समय उसके साथ होते। हर साल तीरथा पीर के सलाना उत्सव पर एक बड़ी मंडली के लीडर के रूप में जाता। उत्सव से 3-4 महीने पहले ही लोगों को निगाहे जाने के लिए प्रेरित करने लग जाता। यह अब पक्का सरवरिया बन चुका है। समय बीतता गया। घर में एक लड़की ने जन्म लिया, जो अब 18वें साल में पैर रख रही है। सब सुख आराम है। गांव में भी बहुत मान-सम्मान है। राज दरबार में भी अच्छी पूछ होती है। बस नहीं है तो केवल मन का चैन।

कहीं यही बात उस को खटकती रहती है कि मैं हिन्दू हूं, माता-पिता हिन्दू थे। हिन्दुओं वाला ही मेरा नाम है। पर पूजा करता हूं 'कब्र' की। इसने 'गुरू के चक्क' {अमृतसर का पहला नाम} की शोभा के बारे में सुन रखा है। यह भी सुन रखा है कि भाई तिलोका, भाई लंगाह, भाई बहलो जो पहले मुख्य सरवरिये थे, अब सिख बन गये हैं। यह भी जानकारी थी कि सिखों के सब

से बड़े गुरू - गुरू नानक देव जी ने कहा था कि ना कोई हिन्दू है, ना कोई मुस्लिम है। फिर मैं कौन हूं? अपनी धार्मिक पहचान का सवाल तीरथे को परेशान करता रहता। उसने अपनी पत्नी को अपने दिल की बात बताई। अपने मन में आती हिन्दू होने की बात भी कही। यह भी बताया कि सरवरिये तो हम तेरे माता-पिता द्वारा विवाह के समय रखी शर्त के बाद ही बने हैं। यह भी बताया कि हमारा परिवार तो खानदानी राजपूतों का परिवार है। हम पूरन भक्त की वंश में से हैं। अपना धार्मिक विरसा छोड़ कर बीस साल हो गये पीर के गुण गाते। ढोल बजाने और रोट चढ़ाने के इलावा हमारी प्राप्ति ही क्या है? गुण तो उस प्रभु के गाने थे जो सर्व शक्तिमान है, परन्तु हम तो पूज रहें हैं - मिट्टी को। फिर मन को शान्ति कैसे मिले? तीरथे ने मन ही मन फैसला कर लिया था कि इस बार 'निगाहे' जाते समय 'गुरू के चक्क' जाकर गुरू जी के दर्शन अवश्य करूंगा।

पीर के सलाना समागम पर 'निगाहे' जाने वाली मंडली ने 'गुरू के चक्क' के पास पड़ाव किया। अभी तम्बू कनाते लग रही थी कि तीरथा 'गुरू के चक्क' चला गया। शाम के दीवान में संगत जुड़ी हुई थी। 'सोदर' का पाठ हो रहा था - 'तू करता सचिआर मैंडा सांई॥ जो तौ भावै सोई थीसी जो तू देह सोई हों पाई॥१॥ रहाओ॥ {पावन अंग 11} पाठ के बाद रबाबियों ने सुर छेड़े। तबले की थाप के साथ गुरबाणी के शब्द का गायन हुआ :

' जिसहि दिखाला वाटड़ी तिसहि भुलावे कौण॥
जिसहि भुलाई पन्ध सिर तिसहि दिखावे कौण॥{पावन अंग 952 }

कीर्तन का भोग पड़ा तो बाबा बुड्ढा जी ने इसी शब्द के अर्थ करने से पहले फुरमाया कि 'धुर की बाणी' के अर्थ करने हमारे जैसे दुनियावी जीवों की समझ से परे की बात है परन्तु जितनी बुद्वि मुझे सतगुरू जी ने बख्शी है उसी के अनुसार अक्षरी {शाब्दिक} अर्थ ही कर सकूंगा। गुरू साहिब जी फुरमा रहे हैं कि जिस आदमी को परमात्मा अपने तक पहुंचने का रास्ता दिखा देते हैं, फिर ऐसा कौन सा मूर्ख होगा जो उस रास्ते को भुला दे। गुरु साहिब के बताए हुये रास्ते पर ना चले। अगली पंक्ति में इस के दूसरे पहलू के बारे में समझाते हुए कहा कि जिस पर उस प्रभु की कृपा न हो, जिस को परमात्मा खुद रास्ता शुरू करने से पहले ही रास्ता भुला दे, भाव गलत रास्ते पर डाल दे; फिर उसे कोई सीधे रास्ते पर नहीं डाल सकता।

तीरथ ढाई घंटे वहां रूका। उसे ऐसा लगा कि आज का कथा-कीर्तन सारा ही उसके जीवन से मेल खाता है। गुरू जी के दर्शन तो ना कर पाया परन्तु सिखों से मिलकर एक अजीब सा रंग चढ़ रहा था। चढ़े भी क्यों ना? जब बाबा बुड्ढा जी जैसे महान व्यक्ति के ना केवल दर्शन ही हुए हों बल्कि उनसे गुरू शब्द की विचार भी सुनी हो। रंग तो चढ़ना ही था। कहां ढोल डग्गे का शोर-शराबा और कहां तबले की मीठी-मीठी थाप? कहां खुद लिखे कच्चे गीत और कहां 'धुर की बाणी' का कीर्तन? कहां बेसुरे गलों में से निकली आवाज़ें और कहां रबाब की मीठी धुनों के साथ

सुरों का आलाप? तीरथे का जाने को मन ही नहीं हो रहा था परन्तु अब आखिरी बार 'निगाहे' जाने के लिए उठा और फैसला किया कि वापसी पर गांव नहीं जाना।

तीरथा मंडली के साथ पीर का सलाना उत्सव मनाने के लिए 'निगाहे' गया। परन्तु उस का मन तो 'गुरू के चक्क' में ही रह गया था। वापसी पर उसने अपने एक दोस्त के हाथ संदेशा भिजवा दिया कि वह कुछ दिन 'गुरू के चक्क' रह कर आयेगा। जब वह गुरू दरबार पहुंचा तो कीर्तन हो रहा था। शब्द था :

'लेख न मिटई हे सखी जो लिखिआ करतार'॥ {पावन अंग 929}

शब्द का भोग पड़ा। गुरू साहिब जी संगतों से मिल कर उनकी जरूरतें और मुश्किलें सुन रहे थे। लोगों की मुश्किलें साथ की साथ ही हल हो रहीं थी। आज कुदरती मंडी का राजा दीवान में आया हुया है। गुरू जी ने उसे सामने बिठाया और उसकी इच्छा पूछी। राजा बोला, 'सच्चे पातशाह, भाई कल्याणे से आपजी के दरबार की शोभा सुनकर आप के चरणों में हाज़िर हुआ हूं। परन्तु यहां भी कीर्तन सुनकर मन में शंका पैदा हो गई है कि अगर लिखे हुए लेख मिटते ही नहीं तो फिर यहां आने का क्या लाभ? गुरू जी ने फुरमाया, 'यह हमारे बड़े गुरू धन गुरू नानक साहिब जी की बाणी है। यह ना टाली जाने वाली सच्चाई है। पर तू चिन्ता ना कर। दो-तीन दिनों में तुझे इस का जवाब मिल जायेगा।

उस रात को राजा उदास ही रहा। उसका मन कह रहा था कि अगर गुरू जी समर्थ हैं तो मेरे प्रश्न का उत्तर अभी क्यों नहीं दिया? दो तीन दिन का इन्तजार क्यों? {आखिर राजा था ना} इन्ही विचारों में रात देर से नींद आई। सोते हुए सुपना आया कि उसका जन्म सैंसीओं के घर हुआ। सुपने ही में बड़ा हुआ, जवान हुआ, विवाह हुआ, बच्चे हुये। सारा जीवन मेहनत के बाद भी गरीबी और दरिद्रता में व्यतीत हुआ। 60 साल का हो कर मर गया। उसको दबाया गया और इतने में उसकी नींद खुल गई। सोच रहा है यह आज कैसा सुपना आया? अगले दिन आये सुपने के बारे में गुरू जी को बताया। गुरू जी केवल मुस्कराये एवं शांत रहने के लिए कहा।

शाम के समय गुरू जी राजे को साथ लेकर शिकार के लिए जंगल में गये। जंगल में गुरू जी जान-बूझ कर उससे अलग हो गये। राजा रास्ता भटक कर किसी गांव में पहुंच जाता है। वहां लोगों ने उस को घेर लिया और बोले, 'लोगों का उधार वापिस करने के मारे मरने का पाखंड कर रहा हैं? अब कब्र से निकल कर राजे का वेश धार कर घूम रहा हैं? घर वाले और बच्चे घर चलने के लिए कहने लगे। राजे ने बहुत कहा कि वह तो मंडी का राजा हरी सैन है। पर लोग कहां मानने वाले थे क्योंकि शक्ल वही है, कदकाठ वही है। इतनी देर में गुरू जी वहां आ पहुंचे। उन्हों ने वहां आ कर गांव वालों को समझाया। राजे और लोगों की तसल्ली के लिए कब्र खोदी गई। कब्र में अपनी शक्ल के बंदे को मरे हुआ देख कर राजा हैरान-परेशान हो रहा है।

अगले दिन गुरू जी ने सारी बात राजे के ही मुंह से संगत को सुनवाई। बाद में गुरू साहिब जी बोले,' राजा हरी सैन जी, अब आप के मन में उस दिन पैदा हुए शंके का निवारण करते हैं:-

लिखे हुए लेख मिटते नहीं, भोगने पड़ते हैं। परन्तु संगत में किये हुए सत्संग का फल आप को यह मिला कि 60 साल की बुरी हालत और गरीबी वाली उम्र स्वप्न में ही व्यतीत हो गई और यह फल केवल यहां के सत्संग का ही नहीं बल्कि उस समय से ही आप को मिलना शुरू हो गया था जब से आप के मन में यहां आने का विचार ही बनने लगा था। यहां आकर तो वह बीज पौधा बना और उस को फल लगा।'

यह सब कुछ तीरथे ने खुद देखा और सुना। इस सारी घटना ने उस के मन में इतना विश्वास बना दिया कि दीवान की समाप्ति के बाद तीरथे ने गुरू जी के पास जा कर चरणों पर माथा टेका और सिखी बख्शिश करने की बेनती की। गुरू साहिब जी ने कृपा दृष्टि करते हुए पूछा,'भाई तू कौन है? कहां से आया हैं?

'सतगुरू जी, मैं तीरथ मंझ हूं। कंगमाई गांव का चौधरी हूं। सरवरिये पीर को मानने वाला हूं। परन्तु अब आप की संगत में से यह जान गया हूं कि मैं बहुत अन्धेरे में हूं। अब आप मुझ पर कृपा करो और अपना सिख बना लो।'

गुरू साहिब जी ने फुरमाया,'सिख बनना आसान काम नहीं। बाल से भी बारीक खंडे की धार पर चलना पड़ता है। दुख सह कर भी नम्रता से परमात्मा के हुक्म में चलना पड़ता है।'

तीरथ एक दम बोला,'मैं तैयार हूं जी।'

गुरू साहिब जी ने फिर फुरमाया,'पुरखा, सिखी के ऊपर सिखी नहीं टिक सकती।'

चौधरी तीरथ एक दम गुरू जी द्वारा की गई भेदभरी चोट को समझ कर बोला,'मैं कब्र गिरा दूंगा सतगुरू जी।'

गुरू जी ने फिर कहा, 'तेरे लोगों ने तेरा साथ छोड़ देना है। जीना हराम कर देना है तेरा। सारे सुख जाते रहेंगे। एक बार फिर सोच लो।'

तीरथ के मन में मंडी के राजे के साथ घटी घटना का इतना असर था कि वह हाथ जोड़ कर एक ही विनती कर रहा है,'मुझे अपनी सिखी बख्श दो। मुझे अपनी सिखी बख्श दो।'

गुरू साहिब जी दयालु होकर बोले,' पुरखा, तीरथ नाम है तेरा। 'तीरथ' करने के लिए 'निगाहे' जाता रहा हैं। पर असली 'तीरथ' तब होगा जब प्रभु की 'निगाह' तेरे ऊपर होगी। दूसरी बात यह कि तीरथ नाम के कई सिख हैं हमारे। आज से तू भाई मंझ हुआ। जा कुछ दिन सेवा कर। सिमरन कर वाहेगुरू का। संगत कभी ना छोड़ना।

अभी सेवा - सिमरन करते हुये केवल दस दिन ही हुये थे कि भाई मंझ को गुरू जी ने बुलाया। उस को अपने गांव जाने का हुक्म दिया। सेवा - सिमरन कभी ना छोड़ने का उपदेश दिया। घर में बनी कब्र को गिराने का वादा लिया। और कहा, 'मुश्किलें आंएगी, धबराना नहीं। उस समय तक हमारे पास ना आना जब तक हम खुद ना बुलायें।'

गुरू साहिब जी के साथ किये वादे अनुसार गांव आ कर भाई मंझ ने सबसे पहला काम पीर की क़ब्र गिराने का किया। लोगों ने क़ब्र की मिट्टी निकली देख कर बहुत बुरा भला कहा। कई सरवरियों ने राज दरबार में शिकायत करके चौधरी की पदवी से हटवा दिया। फिर पंचायत

द्वारा इसके बाईकाट का हुक्म जारी करवा दिया। भाई मंझ जी के साथ सहानुभूति करने वालों और नज़दीकी साथियों ने भी पंचायत के डर से बोलना बंद कर दिया। सुसराल वालों ने भी बोलचाल बंद कर दी।

लीला प्रभु की, उनकी भैंसें और अन्य पशु भी किसी बीमारी के कारण मर गये। कारोबार खत्म हो गया। मुसीबत के समय के लिए जोड़ी पूंजी भी समाप्त हो गई। लोगों के अनुसार यह पीर द्वारा की गई मार थी, पर भाई मंझ के लिए यह गुरू साहिब जी द्वारा लिया उनका इम्तिहान था। भाई मंझ साथ वाले गांव जा कर मज़दूरी करने लगे। जिस दिन काम ना मिलता तो घास खोद कर बेच देते। गरीबी का कोई अन्त ना रहा। परन्तु भाई मंझ घबराये नहीं।

परमात्मा की रज़ा में दिन गुरू-गुरू करके व्यतीत हो रहे थे। एक दिन 'गुरू के चक्क' से एक सिख गुरू साहिब जी का हुक्मनामा ले कर आया। साथ ही गुरू जी द्वारा रखी शर्त भी सुनाई कि हुक्मनामा देने से पहले भेंट रूप ग्यारह रुपये लेने हैं। भाई मंझ ने आंखें बन्द करके कहा कि धन्य भाग मेरे जो गुरू जी ने मुझे इस लायक समझा। आये हुए सिख को मंझा बिस्तर दिया। उसने और उसकी पत्नी ने मिलकर लंगर छकाया। जब वह सिख आराम करने लगा तो भाई मंझ ने सारी बात अपनी पत्नी को बताई। उसने पति को चिंतातुर देखकर अपने आप को गिरवी रखने की बात कही।

भाई मंझ ने साथ के गांव में शाहूकार के पास अपनी पत्नी को गिरवी रख कर ग्यारह रुपये लिए। गुरू साहिब जी द्वारा भेजे गुरसिख को भेंट देकर हुक्मनामा लिया। {इस घटना को कई लोग गुरमत के विरूद्ध बताते हैं कि भाई मंझ ऐसा नहीं कर सकते। ऐसे लोगों की जानकारी के लिए बताना जरूरी है कि उस समय मज़दूरी करने का यह भी एक ढंग था। गरीब लोग अपने बच्चों, बच्चियों, पत्नियों और खुद अपने आप को कुछ पैसा लेकर केवल रोटी-पानी पर ही अमीर लोगों के पास भेज दिया करते थे। इस को 'इन्सान गहने रखना' या 'बंधुआ मजदूरी' कहते थे। जब उनके पास पैसे होते तो पैसे वापिस करके अपना बन्दा घर ले आते} भाई मंझ ने हुक्मनामा माथे से छुआया और पढ़ा। केवल इतना ही लिखा था कि भाई मंझ जी, अभी कुछ समय अपने गांव में ही रहो, तुम्हें करतार याद रहे, फिर बुलायेंगे। भाई मंझ का विश्वास फिर भी ना डगमगाया। गुरू साहिब जी के हुक्म को अपना इम्तिहान समझ कर दिन उसी तरह व्यतीत करने लगा। पर अब वैराग्य और बढ़ गया। अब रात को नींद नहीं आती। नींद ना आने की वजह से सिमरन और बढ़ गया। प्रीति और अधिक पक्की होती गई।

पन्द्रह दिनों बाद गुरू जी ने फिर हुक्मनामा भेजा। फिर वही शर्त रखी। भेंट 11-00 रुपये। हुक्मनामा लेकर आये गुरसिख ने कहा, 'भाई मंझ तू धन्य हैं। गुरू साहिब जी को तुम्हारी हालत के बारे में सब कुछ पता है। पर पता नहीं क्यों वह तुम्हारी परीक्षा ले रहे हैं? यह तो गुरू की गुरू ही जाने। पर तुम्हारी अडोलता और भरोसे को बार-बार प्रणाम है।'

हुक्मनामा लेकर आये गुरसिख को जल-पानी देकर आराम करने के लिए मंझा दे दिया। आप अभी बाहर निकला ही था कि गांव का एक जवान लड़का मिल गया। वह बहुत बातुनी था। धार्मिक विचारों से परे, पर भला इन्सान था। वह बोला, 'सुना भाई चाचा, सिखड़ा बन के क्या मिला?'

भाई मंझ ने कहा, 'यह तो तू जानता ही है, फिर पूछता क्यों है?'

वह फिर बोला, 'ठीक है चाचा, तुझे कुछ मिला भी नहीं और मिला भी बहुत कुछ है। मैं चाहे किसी को नहीं मानता पर तेरे भरोसे को समझ सकता हूं। किसी के बनो तो तुम्हारे जैसे बनो। किसी को बनाओ तो भी तुम्हारे जैसे बनाओ। अच्छा चाचा यह तो बता कि कौन से काम के लिए जा रहा हैं?

भाई मंझ के दिमाग में एक दम यह बात आ गई कि इसको भी तो परमात्मा ने भेजा है। औरौं से भी तो पैसे मांगने ही हैं, इसी से क्यों ना मांग लूं? भाई मंझ ने कहा, 'पुत्र जी, मुझे ग्यारह रुपये चाहिए।'

'चाचा, इस के बदले तू मुझे क्या देगा?

'जो तू कहे'।

'तो फिर अपनी लड़की मुझे दे दे।'

'ठीक है, दे ग्यारह रूपये। लड़की मैं तेरे घर भेज दूंगा।'

उसको इस जवाब की आशा नहीं थी। वह कहने लगा, 'मैं तो मज़ाक कर रहा था चाचा। तेरी लड़की तो मेरी गांव की बहन हुई। यह ले-ले तूं ग्यारह रुपये। मुझे शर्मिंदा मत कर।'

भाई मंझ ने पैसे पकड़ते हुए कहा, ' तेरी बहुत मेहरबानी। इसके बदले लड़की मैं तेरे घर पहुंचा दूंगा। तू इसको अपनी बहन समझना या कुछ ओर। यह सब तेरे पर। भाई मंझ ने सोचा कि अभी से ही गुरू साहिब जी ने इसका मन बदल दिया है तो हो सकता है कि बिटिया की संगत से यह गुरू जी का सिख ही बन जाये।

भाई मंझ ने 11-00 रूपये भेंट देकर हुक्मनामा लिया। तीन बार माथे को छुआया, खोला, फिर पढ़ा। लिखा था - भाई मंझ, आप इस सिख के साथ ही 'गुरू के चक्क' आ जाओ। भाई मंझ ने धन गुरू अरजन साहिब जी उचार कर 'गुरू के चक्क' की तरफ मुंह करके नमस्कार किया। बिटिया को उस भले इन्सान के घर छोड़ कर वह प्रशादा छक कर 'गुरू के चक्क' की ओर चल पड़े।

दो दिन के सफर के बाद वह 'गुरू के चक्क' पहुंचे। गुरू साहिब जी उनको लंगर के बाहर ही मिल गये। दोनो ने गुरू साहिब जी को नमस्कार किया। गुरू जी ने भाई मंझ को हुक्म किया, ''दोनो समय सत्संग में जुड़ना है। सदा नाम जपते रहना है। जितनी अधिक हो सके सेवा करना। भला होगा।''

शाम के दीवान में पहले कथा होती थी फिर कीर्तन। उसके बाद 'सोदर' का पाठ। फिर अरदास करके भोग डाला जाता था। कुदरती आज के दीवान में कथा का प्रसंग सेवा का था। कथा

करने वाले गुरसिख ने पहली साखी गुरू अंगद देव जी की सुनाई, जब वह करतारपुर में भाई लहणा जी के रूप में सेवा कर रहे थे। करतारपुर से एक बार अपने घर खडूर आये। {गांव खडूर को खडूर साहिब बाद में कहा जाने लगा } दो तीन दिन बाद जब वह वापिस करतारपुर जाने लगे तो लंगर के लिए 30-32 किलो का नमक का ढेला ले लिया। {पहले नमक बहुत बड़े ढेलों अर्थात टुकड़ों में ही होता था जिस को तोड़ कर पीसा जाता था} नमक अपने सिर पर उठा कर चल पड़े। बड़े लड़के दातू जी ने कहा कि पिता जी घर में घोड़ियां हैं। एक घोड़ी ले जाओ। 25-30 कोस {एक कोस का सवा मील } का पैदल सफर और सिर पर इतना भारी नमक का ढेला। भाई लहणा जी ने कहा, 'पुत्र जी, पहले समझ नहीं थी, घोड़ियों पर ही जाते रहे हैं। अगर घोड़ी पर गया तो मेरे और नमक के भार की सेवा तो घोड़ी ने ही ले जानी है।

फिर गुरू अमरदास जी द्वारा गागर उठाने का जिक्र किया कि बारह सालों में बुर्जुग बाबा अमरदास जी के एक बार भी मन में नहीं आया कि गुरू अंगद देव जी ने ज़रूरी ब्यास के जल से ही स्नान करना है? यहां नज़दीक किसी कूऐं से पानी नहीं मंगवा सकते? यह भी बताया कि पानी की गागर लेने जाते समय अपना मुख सदा खडूर साहिब की तरफ रखते थे, ताकि गुरू जी की तरफ पीठ ना हो जाये।

फिर भाई जेठे { गुरू रामदास जी } द्वारा गुरू दरबार के लिए की गई सेवा की बात सुनाई कि गुरू घर के दामाद होते हुए भी उन्होने कभी यह नहीं सोचा कि सिर पर उठाई टोकरी कीचड़ के साथ भरी हुई है। बने हुए थड़े बार बार तोड़ने के समय भी उन्होने कभी माथे पर बल नहीं डाला। फिर अब मौजूद गुरू अरजन देव जी का एक प्रसंग सुनाया। काबुल की संगत दर्शनो के लिए आई। रात का समय था। सेवक जा चुके थे। गुरू जी ने वेश बदल कर खुद रोटियां पका कर संगत को प्रशादा छकाया। दाला वरताया। जूठे बर्तन भी साफ किये। जब भाई बहलो और भाई साल्हो जी को पता चला तो वह दौड़े दौड़े आये। पर तब तक गुरू अरजन साहिब जी तो हाथों से सेवा करने का सबक सिखा चुके थे। उस दिन कीर्तन में भी सेवा के प्रकरण वाले शब्दों का गायन किया गया-

'सतगुर की सेवा सफल है जे को करे चित लाये॥' {पावन अंग 552 }

अगला शब्द भी सेवा के सम्बन्ध में था :

'सा सेवा कीती सफल है जित सतगुर का मन मन्ने॥' {पावन अंग 314 }

भाई मंझ ने अपना नित्य का नेम इस तरह बनाया कि आराम थोड़ा ही करते। अमृत वेले उठते। स्नान करते। फिर सत्संग, हरी कीर्तन का आनन्द लेते। कुछ समय गुरबाणी याद करते। फिर गुरू जी के घोड़ों के लिए घास खोदने चले जाते। घास की सेवा के बाद लंगर में से प्रशादा छक कर लंगर के लिए जंगल में से लकड़ियां काटने चले जाते। वापिस आकर कुछ समय सरोवर

की सफाई की सेवा करते। कई बार वहां बैठे गुरसिखों से गुरू जी की साखियां सुनते। शाम को फिर 'सोदर' के दीवान में जुड़ते। फिर लंगर के जूठे बर्तन मांजते।

इस तरह 6 महीने बीत चुके थे। गुरू जी 'बन रहे बोहिथ' {जहाज} पर हर पल नज़र रख रहे थे। एक दिन उन्होंने इस जहाज के एक फट्टे को पक्का करने के लिए कील ठोकी। पास जाकर कहा, 'भाई मंझ जी, क्या मिला तुझे मेरी सिखी में से? पहले चौधरीपन गया। गांव में से सम्मान खत्म हुआ। फिर पशु मर गये। कारोबार खत्म हो गया। पत्नी को भी गिरवी रखना पड़ा। बेटी बेचनी पड़ी। यहां आकर इतनी सख्त सेवा। जिस ने कभी अपने बर्तन भी नहीं उठाये थे वह लोगों के जूठे बर्तन मांजता फिरता है। क्या मिला तुझे मेरी सिखी में से? जाओ अपने गांव और फिर संभालो अपनी चौधर। सब कुछ मिलेगा पहले की तरह। बल्कि ज्यादा ही दे देंगे।' भाई मंझ ने एक दम चरण पकड़ लिए और बोले, 'सच्चे पातशाह, चरणों से बिछुड़ने की बात ना करना जी, और जो मर्जी हुक्म दे दो।'

फिर गुरू जी बोले, 'प्रशादा कहां से खाते हो?'

'लंगर में से ही खाता हूं, सच्चे पातशाह जी' भाई मंझ ने कहा।

'अच्छा, मज़दूरी का लेखा साथ ही साथ कर रहे हो। चौधरी रहे हो ना।' गुरू जी ने थोड़ा सख्ती से कहा।

भाई मंझ दोनो हाथ जोड़ कर नम्रता से बोले, 'बख्श लो सतगुर जी, गलती हो गई।'

भाई मंझ अब किरत की महानता को समझ चुके थे। उस दिन के बाद उन्होने अपने खर्चे के लिए रात को आटा पीसने की मज़दूरी करनी शुरू कर दी। जो भी पैसा मिलता उस से अन्न पानी ग्रहण करते। इतिहास में यह भी लिखा है कि उसके भी चार हिस्से करते। एक हिस्सा दसवन्ध निकालते। एक हिस्सा गुरू की गोलक में डालते। एक हिस्सा गरीबों मे बांटते। एक हिस्सा अपने भोजन के लिए रखते। पर जब कभी सेवा में अधिक समय लग जाता और मज़दूरी ना कर सकते तो पतीले-कलछियां धो कर जो मिलता वह पी कर गुजारा कर लेते। लंगर में से प्रशादा नहीं छकते थे।

इस तरह समय बीतता गया। प्रीति अधिक पक्की होती गई। 'गुरू का बोहिथ' तैयार होता गया। पर कभी कभी अपनी बेटी की सोच दिमाग में आ जाती। फिर गुरू जी के आगे उसकी रक्षा के लिए अरदास करते। यह बेनती तो बहुत जल्दी मन्जूर हो गई। एक दिन गांव से वही भला इन्सान उनकी बेटी को 'गुरू के चक्क' ले आया। भाई मंझ के साथ एक लड़के को मिला कर कहने लगा, ' चाचा, यह तुम्हारा दामाद है। मैंने अपनी बहन का विवाह इस के साथ कर दिया है। भाई मंझ की आंखों में शुकराने के आंसू थे। कितनी ही देर तक गुरू साहिब जी का धन्यवाद में उन के मुख से कुछ भी नहीं निकला।

अब भाई मंझ को किसी बात का फिक्र नहीं था। सेवा और ज्यादा लग्न से होने लगी थी। एक दिन लंगर के लिए लकड़ियां ला रहे थे तो बहुत जोर से आंधी आ गई। हवा इतनी तेज थी कि लकड़ियों के गट्ठे के साथ भाई मंझ जी का शरीर भी डगमगा रहा था। आंखें ज्यादा समय खोलते तो मिट्टी से भर जाती। रास्ता देखने के लिए पल दो पल ही आंखें खोल पाते, फिर बंद कर लेते। रास्ते में एक अन्धा कुंआं था, जिसके चारों तरफ ईंटें नहीं लगी थी, भाई मंझ उस में गिर गये। कुंऐ में पानी बहुत कम था। गिरे भी सीधे। लकड़ियां के गट्ठे को पक्का करके पकड़ लिया। उनकी इसी कोशिश की वजह से गट्ठा सिर पर टिका रहा। भाई मंझ ने गुरू साहिब जी का लाख लाख शुकराना किया कि गिरा तो हूं ,सेवा में कोई गलती की वजह से। पर शुक्र है कि गुरू जी ने अपने लंगर की लकड़ियां सूखी रखने के लिए सिर पर ही टिकाई रखी। इधर भाई मंझ ने गुरू जी का शुकराना किया उधर गुरू साहिब जी अपने सिंहासन से उठ पड़े। नंगे पैर ही जंगल की ओर दौड़ने लगे। सेवकों को रस्से लेकर आने का हुक्म दिया। एक सिख जोड़े लेकर दौड़ा पर आज गुरू साहिब जी के पास जोड़े पहनने का समय नहीं था। कुछ मिन्टों में ही गुरू साहिब जी कुंऐ के पास पहुंच गये। रस्सी कुंऐ में लटकाने का हुक्म दिया। सेवक जान चुके थे कि भाई मंझ कुंऐ में गिर पड़े है। उन्हों ने भाई मंझ को रस्सा पकड़ कर ऊपर आने के लिए विनती की। पर भाई मंझ ने लकड़ियों के गट्ठे को रस्सा बांधते हुए कहा, 'लकड़ियां सूखी हैं, पहले गुरू के लंगर की लकड़ियां बाहर निकालो।' लकड़ियां बाहर निकाली गई। दूसरी बार रस्सा कुंऐ में डाला। भाई मंझ बाहर आ गये। गुरू साहिब जी को नंगे पैर देख कर उनकी आंखों से आंसू बहने लगे। वह चरणों पर गिर पड़े। बोले,' आज आप ने मेरी लाज रख ली वरना मैंने तो लंगर की लकड़ियां गीली करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी।

'जग को पार लगाने वाला' 'गुरू का बोहिथ' तैयार था। केवल रंग - रोगन करना ही बाकी था। गुरू अरजन साहिब जी ने भाई मंझ को अपनी पवित्र बाजुओं के साथ उठा कर खड़ा किया। अपनी छाती से लगाया। उन्होंने उसके गीले कीचड़ से भरे कपड़ों की परवाह ना की। अपने गले

लगाया। फिर कन्धों से पकड़ कर थोड़ा पीछे किया। कृपा की नज़र पैरों से लेकर सिर तक डाली। सुन्दर मुखड़े से उचारा,

'भाई मंझ जी, तुम्हारी सेवा परवान हुई। मांगो क्या मांगते हो?' 'बोहिथ' के ऊपर रंग रोगन होना शुरू हो चुका था।

भाई मंझ बोले, 'आप ने जो कुछ देना है, दे रहे हैं। यह दान दो कि मांगने की बिरती ही ना रहे।'

इसके इलावा कुछ और मांगो' गुरू साहिब जी ने विस्माद अवस्था में फुरमाया।

भाई मंझ हाथ जोड़ कर बोले, 'सच्चे पातशाह, कलयुग का समय है। सिखों के लिए इतने कठिन पर्चे ना डाला करो। कहीं वो डोल {भटक} ना जाएं।'

गुरू साहिब जी पूर्ण दयालुता की अवस्था में थे, बोले, 'यह भी मिलेगा, कुछ और मांगो।'

भाई मंझ बोले, 'सतगुरू जी, आज प्रसन्न हुए हो, मेरी झोली मे डालो, वाहेगुरू का सिमरन कभी छूटे ना। आप के चरणों से कभी ध्यान टूटे ना। संगत की सेवा कभी छूटे ना।'

धन गुरू अरजन साहिब जी ने पूरे वजद में आ कर {प्रेम से ओत-प्रोत 'निगाह' डाल कर} उच्चारण किया -

'मंझ प्यारा गुरू को, गुर मंझ प्यारा।
मंझ गुरू का बोहिथा, जग लंघण हारा।'

****

भाई तिलोका जी

भाई तिलोका जी दुआबे में गढ़शंकर के निवासी थे। भाई काहन सिंह जी नाभा ने अपने ग्रंथ 'महान कोश' में इन को भाई तिलक जी लिखा है। गुरू अरजन देव जी के यह पूर्ण भरोसे और कमाई वाले सिख थे। सिखी मार्ग में प्रवेश करने से पहले यह निगाहे वाले पीर सखी सरवर के पक्के भक्त थे। हर साल पीर की सलाना याद मनाने के लिए एक बड़ी मंडली को लेकर निगाहे पीर के दर्शन करने जाते थे। इनके द्वारा गुरू नानक साहिब जी के सिखी मार्ग को धारण करने अर्थात सिखी मार्ग में प्रवेश करने वाली घटना बहुत रोमांचक है। पूर्ण श्रद्धावान सिख इस घटना को परमात्मा की मौज भी कह सकते हैं।

एक बार भाई तिलोका जी हर साल की तरह सखी सरवर की सलाना याद मनाने के लिए इलाके के बहुत सारे लोगों को लेकर 'निगाहे' की तरफ रवाना हुए। यह गांव डेरा गाज़ीखान {अब पाकिस्तान में } से 20 मील आगे पड़ता है। दुआबे से 'निगाहे' जाते समय इन मंडलियों को रास्ते में 'गुरू के चक्क' {अब अमृतसर} के पास पड़ाव करना पड़ता था। भाई तिलोका की मंडली ढोल ऊपर डग्गे बजाती, पीर की उस्तति के गीत गाती जा रही थी। इन्होने 'गुरू के चक्क' के पास पड़ाव किया। दाल-रोटी के लिए चूल्हों का इन्तज़ाम करने जा ही रहे थे कि परमात्मा की मौज बारिश बहुत जोर से आ गई। रुकने का नाम ही नहीं। भाई तिलोका जी ने कहा, 'अब ऐसा करो, सभी 'गुरू के चक्क' चलो। वहां गुरू के लंगर में खाना खाकर आराम कर लेंगे। सुबह सूरज निकलने से पहले ही चल पड़ेंगे। जब यह मंडली 'गुरू के चक्क' पहुंची तो रात होने वाली थी। दीवान लगा हुआ था। रबाबी भक्त कबीर जी का कोई गीत गा रहे थे।

भाई तिलोका गीत के बोल सुन कर मोहित हो गया। बाद में उस को पता चला कि गुरू के सिख गुरबाणी को गीत नहीं कहते। वह तो धुर दरगाह से आई बाणी को शब्द कहते हैं। फिर इसी शब्द के अर्थ किसी मुख्य सिख ने किए। इनका नाम भाई गुरदास था। अगले दिन भाई तिलोका मंडली के साथ गये तो ज़रूर, पर जाते-आते समय उनका ध्यान 'गुरू के चक्क' में ही रहा। उनके उत्साह में कमी देख कर साथियों ने कहा कि तिलोका जी क्या बात है, इस बार पीर की पूजा में पूरी तरह से हिस्सा नहीं लिया? तब भाई तिलोका जी ने अपने दिल की बात बताई कि मैने तो 'गुरू के चक्क' वाले को अपना गुरू मान लिया है। इतने सालों से मन को शान्ति नहीं मिली थी। यही पीर की दरगाह से लेने जाते थे, वह कुछ ही पलों में गुरू घर से प्राप्त हो गई है।

भाई तिलोका जी ने वापसी पर दरिया पार करते समय सब के सामने पीर का झंडा ऊंचा करके ज़ोरदार आवाज़ में बोला,' हे सखी सरवर, मेरा मन अब तेरी श्रद्धा से विचलित हो गया है। यदि आप ने दरिया पार करने से पहले मेरे मन को काबू न किया तो मैं तेरा यह झंडा, ढोल और डग्गा सब दरिया में फैंक दूंगा। अगर आप इस को अपनी अवज्ञा समझो तो मुझे पानी में ही डुबो देना। अगर नहीं डुबोया तो सब से पहले घर जा कर मैं तेरी कब्र गिरा दूंगा।

भाई तिलोका जी ने दरिया में जा कर एक बार फिर बोला कि हे पीर जी, तुम ने 'गुरू के चक्क' की तरफ जाते हुए मेरे मन को नहीं रोका। यह संभालो अपना झंडा, ढोल और डग्गा। अगर मुझे दरिया में ही डुबोना है तो डुबो दो। दरिया पार करके साथियों ने समझाया। पीर की शक्ति का डर भी दिया। भाई तिलोके पर इसका कोई असर ना पड़ा। घर जा कर गुरू जी के आगे मन ही मन अरदास कर के उसने पीर की कब्र गिरा दी। फिर 'गुरू के चक्क' जा कर बहुत प्रेम से गुरु जी की संगत की। सेवा-सिमरन में मग्न रहते। कुछ दिनों में ही गुरू अरजन देव जी ने ऐसी कृपा दृष्टि की कि वह निहाल हो गये। गुरू जी ने उनको अपने नगर जा कर सिखी के प्रचार का हुक्म दिया। अब एक दो महीनों बाद जब गुरू जी के दर्शन करने जाते तो दो चार बन्दों को संगत रूप में साथ लेकर जाते।

एक बार गढ़शंकर में एक सिद्ध जोगी आया। उसका नाम था महेशा। उसने भारी तपस्या करके रिधियों - सिद्धियों को वश में किया हुआ था। अपनी उम्र 300 साल की बताता था। कभी हवा में से विभूती पकड़ कर दे देता। कभी फल और कभी फूल का प्रसाद भी हवा में से पकड़ कर दे देता था। इस तरह उसने कुछ लोगों को अपने भ्रम जाल में फंसा लिया था। इन भ्रमित लोगों में से एक ने इसे अपनी जमीन पर डेरा बनाने के लिए जगह दे दी। कुछ रिधियों - सिद्धियों वश में होने के कारण उसने इलाके में अपनी अच्छी दुकानदारी चला रखी थी। परन्तु भाई तिलोका जी का इस के डेरे पर ना आना उसे अच्छा नहीं लगता था। अन्दर ही अन्दर उसे यह डर था

कि कहीं उसको मानने वाले भाई तिलोका जी की बातों से प्रभावित हो कर उसके डेरे पर आना ना छोड़ दें।

अपने इसी डर के कारण उसने यह ऐलान करवा दिया कि शनिवार को जो भी उसके दर्शन करेगा उसको एक साल के लिए स्वर्ग मिलेगा। नियत दिन सभी लोग इकट्ठे हो गये। चेलों ने तम्बू में जाकर बताया कि सभी लोग आ गये हैं, अब दर्शन दो। पर फिर किसी ने उस को बताया कि भाई तिलोका नहीं आया। जोगी ने एक सज्जन को भाई तिलोका जी को लाने के लिए भेजा। तिलोका जी ने आने से इन्कार कर दिया और कहा कि मेरे गुरू जी ने तो मुझे जीते जी ही स्वर्ग बख्शा हुआ है। तुम्हारे जोगी का स्वर्ग तो मर के मिलेगा। जोगी ने उसको दोबारा भाई तिलोके के पास भेजा कि उसको बोलो कि जोगी जी आप को पांच साल के लिए स्वर्ग देंगे। भाई तिलोका जी फिर भी ना आये। जोगी ने अपना अपमान महसूस करते हुए झट ही पैंतरा बदल लिया और कहने लगा, चलो, अगर वह यहां ना आने का हठ करके बैठा है, तो मैं उसके घर जाकर दर्शन दे आता हूं क्योंकि हठ भी जोग का ही एक रूप है। जोगी अपने चेलों के साथ भाई तिलोके के घर गया। कई तमाशबीन भी साथ हो लिये। भाई तिलोका जी ने दरवाज़ा अन्दर से बन्द किया हुआ था। जोगी उसके घर की गरीबी वाली हालत देख कर हैरान है कि ऐसी हालत में रहते हुए भी वह स्वर्ग के सुखों के लालच में नहीं फंसा। यह कैसा भरोसा है? परन्तु उसने अपने आप पर काबू रखा। बाहर से ही बोला, 'भाई तिलोका जी, दरवाज़ा खोलो, मैं तुम्हारे हठ पर कुर्बान हूं। तुम्हारे हठ जोग को देख कर तुम्हें दर्शन देने आया हूं। क्या आप को स्वर्ग की जरूरत नहीं? स्वर्ग के सुखों की जरूरत नहीं?

भाई तिलोका जी ने कहा, 'मुझे सुखों की कोई जरूरत नहीं है। जो सुख गुरू जी ने मुझे बख्शा हुआ है, उसके ऊपर कुछ भी नही है।'

जोगी बाहर से ही बोला, 'मैं तो तुम्हारे कच्चे मकान को देख रहा हूं। ना कोई रथ ना घोड़े। ना बाग ना पौधे। यह कैसा सुख है जो तुम्हारे गुरू ने तुम्हें दे रखा है?'

भाई तिलोके ने कहा, ' वाह जोगी जी, तुम्हारी समझदारी को दूर से ही प्रणाम। आप साधू हो कर भी परमात्मा से बड़ा पदार्थों को समझते हो। तुम तो इतने बड़े भुलेखे में हो। मेरे गुरू जी तो कहते हैं :

'संग ना चालस तेरे धना, तूं क्या लपटावह मूरख मना॥ {पावन अंग 288}

गुरू अरजन साहिब जी तो सुखमनी साहिब जी के इस पदे में फुरमा रहे हैं कि राज-रंग, हाथी-घोड़े, पुत्र-मित्र, भाई-बन्धु सब झूठ का पसारा है। अब जोगी तो अन्दर तक हिल गया। मानो उसके अन्दर का अन्धेरा गुरबाणी की एक पंक्ति ने ही दूर कर दिया है। वह कहने लगा, ' ओ

सिखा, तुझ पर कुर्बान। खोल दरवाज़ा, और मुझे अपने दर्शन दे। धन्य हैं तू और धन्य हैं तेरे गुरू जी। मैं तो क्या? मेरे जैसे कई जोगी समाधियां लगा-लगा कर थक गये। प्राणायाम किये। उल्टे लटके। पर यह ज्ञान दृढ़ ना कर सके जो तूने दृढ़ किया हुआ है। कृपा कर और मुझे अपना दर्शन दे।'

भाई तिलोका जी ने अन्दर से ही कहा, 'जोगी जी, मैं यह प्रशंसा करवा कर अपने आप को अंहकार में नहीं डालना चाहता कि सब को दर्शन देने वाला जोगी मेरे दर्शन कर के गया है। तुम जाओ, अपनी गद्दी चलाओ।'

जोगी मिन्नत कर-कर के कह रहा था, 'ना ओ सिखा, तुझे तेरे गुरू जी का वासता, मुझे दे दर्शन और मेरी बेनती मान कर अपने गुरू जी से मिला दे'।

भाई तिलोका जी ने जब गुरू जी के वासते की बात सुनी तो दरवाज़ा खोल दिया। सभी ने देखा कि जोगी ने चरण-वन्दना करनी चाही। पर भाई तिलोके ने आप हाथ जोड़ कर नमस्कार की और कहा, 'जोगी जी, आप साधू हो। उम्र में भी बड़े हो, ऐसा ना करो। मैं तो आप अभी गुरू जी का एक तुच्छ सेवक हूं।' महेशे जोगी ने भाई तिलोका जी को विनती की कि वह उसको गुरू जी के पास ले जाये। भाई तिलोका जी ने उसको अपना मन पक्का करने को कहा। यह भी कहा कि गुरू साहिब जी की शरण में आने से उसकी दुकानदारी खत्म हो सकती है। जोगी ने कहा कि उसका मन पक्का है। मुझे मन की शान्ति चाहिए।

अगले दिन भाई तिलोका जी और महेशा जोगी 'गुरू के चक्क' जाने के लिए चल पड़े। रास्ते में जाते हुये बातों बातों में उस जोगी को भाई तिलोका जी से यह पता चला कि गुरू जी की उम्र कोई 40 साल है। तब उसके मन में ख्याल उपजा कि मेरी उम्र तो 300 साल है और मैं एक 40 साल के बच्चे से ज्ञान लेने जा रहा हूं। इस सोच ने उस को अन्दर तक परेशान कर दिया। पर भाई तिलोका जी उस को गुरबाणी के शब्द सुनाते सुनाते और गुरू जी के आश्चर्यजनक कौतुक सुनाते सुनाते 'गुरू के चक्क' ले ही गये। सेवकों ने गुरू जी को भाई तिलोका जी के साथ एक जोगी के आने की खबर दी। गुरू जी ने हुक्म किया, 'उनको लंगर पानी देकर आराम करवाओ। कल जोगी जी को दीवान में संगत के साथ नही आने देना। उनकी अकेले ही हमारे साथ मुलाकात करवाई जाये।'

अगले दिन जब जोगी गुरू जी के पास गया तो गुरू जी उसे अपनी उम्र से भी बड़े दिखाई दिए। उसने अभी यह सोचा ही था कि भाई तिलोका जी ने गुरू जी की उम्र के बारे में झूठ बोला है। तब गुरू जी उसे काली दाड़ी में और अपनी असली उम्र के दिखाई पड़े। यह करिश्मा देख

कर ही वह अपनी सुध-बुध खो बैठा। गुरू जी ने उसको सत्कार सहित अपने पास बिठाया और पूछा, ' जोगी जी, एक कान में बाली डाली है, दूसरा कान कहां गया?

जोगी बोला, ' महाराज जी, जोग मत धारण करते समय तो दोनो कानों में बालियां डाली गई थी। पर एक दिन दरिया में भक्ति करते समय एक बड़ी मछली कान काट कर ले गई। यह बताते समय जोगी के चेहरे पर उस समय का दर्द भी उभर आया। गुरू जी हंसे और पास रखी गढ़वी की तरफ इशारा कर के बोले, ' देखो जोगी जी, इस गढ़वी में तुम्हारा कान तो नहीं, जो मछली ले गई थी। जब जोगी ने गढ़वी में देखा तो हैरान हो गया। हद हो गई, जो कान 200 साल पहले मछली काट कर ले गई थी, वह गढ़वी में था। कान में बाली भी वही थी जो उस के गुरू ने चेला बनाते समय उसके कान में डाली थी। जोगी उसी समय गुरू जी के चरणों पर सिर रख कर बोला, 'आप में और ब्रह्म में कोई भेद नहीं।' गुरू अरजन साहिब ने अपनी मेहर की नज़र डाल कर उस को निहाल कर दिया। जोगी धन गुरू - धन गुरू करने लगा।

उस जोगी ने गुरू अरजन साहिब जी को विनती की कि उस को अपनी सिखी बख्शो। गुरू साहिब जी ने उसको चरण-पाहुल और नाम की बख्शिश करके गुरबाणी का ज्ञान बख्शा। उससे यह बचन लिया कि वह आज के बाद रिधियों - सिद्धियों का सहारा नहीं लेगा। उसे सिखी का प्रचार करने को कहा। कुछ दिन जोगी ने गुरू जी के पास रह कर उनकी संगत का आनन्द लिया। इस दौरान गुरू जी की ऐसी कृपा हुई कि गुरबाणी और सत्संग ने उसके मन को इतना प्रभावित किया कि उसने अपने सारे सेवकों को भी गुरबाणी और गुरू साहिब जी के साथ जोड़ दिया।

प्यार के साथ बोलो जी :

धन गुरू अरजन देव साहिब जी।

धन भाई तिलोका जी।

****

भाई साल्हो जी

भाई साल्हो जी गुरू रामदास साहिब जी के समय गुरूघर के साथ जुड़े और गुरू हरगोबिन्द साहिब जी के समय तक गुरूघर की अथाह सेवा की। उनके द्वारा की गई सेवा और सिमरन ने उनको कथनी और करनी का पूरा बना दिया। वह जो भी बचन करते, पूर्ण हो जाता। उनके साथी कहते थे कि भाई साल्हो जी की रसना पर प्रभु निवास करते हैं। एक बार मध्य प्रदेश का राजा कंवल सैन 'गुरू के चक्क' गुरू अरजन साहिब जी के दर्शन करने आया। उसके साथ उस का पुत्र भी था। राज कुमार की उम्र कोई 7-8 साल थी। राजे ने शुरू से ही शाही महलों में हुक्म दे रखा था कि राज कुमार को लड़कियों वाले वस्त्र पहनाए जांए क्योंकि वह उस को दुश्मनों की नज़रों से छुपा कर रखना चाहता था। जब राजा गुरू जी के दर्शनों के लिए आया तब भी राज कुमार

ने लड़कियों वाले वस्त्र पहने हुए थे। भाई साल्हो जी उस समय परिक्रमा में झाड़ू लगाने की सेवा कर रहे थे। अचानक ही राज कुमार का पैर झाड़ू पर आ गया। भाई साल्हो जी के मुख से स्वाभाविक ही निकला कि पुत्री, गुरूघर में ध्यान से चला करो ताकि किसी की सेवा, किसी की भक्ति और किसी की बन्दगी में कोई विघ्न ना पड़े। जब राजा कंवल सैन गुरू जी के दर्शन के बाद शाही तम्बू में पहुंचा तो देख कर हैरान परेशान हो गया कि राज कुमार के हाव-भाव लड़कियों वाले हो

गये थे। जब दासी ने उस के कपड़े बदले तो राज कुमार में लड़की वाले सारे बदलाव देख कर राजे को सारी बात बताई। राजे को रात भर नींद नहीं आई। मन में बुरे बुरे विचार उठते रहे। कभी वह अपने आप को कोसता कि मैने राज कुमार को लड़कियों वाले वस्त्र क्यों पहनाए? कभी उसको ख्याल आता कि गुरूघर में मुझ से कोई अवज्ञा हो गई है। कभी सोचता कि यह कैसा धर्म स्थान है जहां से मैं अपने पुत्र को पुत्री बना कर ले जांऊगा। सुबह होते ही उसने गुरू अरजन देव जी को सारी बात बताई और बेनती की कि मुझे अपने दरबार में से अभागा बना कर मत भेजना जी। पता नहीं कहां कहां की मन्नतें मान मान कर पुत्र की प्राप्ति हुई है। आप के दरबार का ध्यान धर के भी अरदास करते रहे हैं। गुरू जी ने राजे को दिमाग पर ज़ोर डाल कर सोचने के लिए कहा कि तुम्हें इस दरबार में कौन-कौन मिला और उसने क्या-क्या कहा? राजे को एक दम याद आया, उसने गुरु जी को बताया कि परिक्रमा में झाड़ू कर रहे एक बुर्जुग सेवादार ने इस के लड़कियों वाले कपड़े देख कर इसे पुत्री कह कर समझाया था।

गुरू साहिब जी एक दम जान गये कि ज़रूर यह भाई साल्हो जी ही हैं जिन की सेवा में विघ्न पड़ा है। गुरू जी ने राजे को समझाया कि कल सुबह जब वह परिक्रमा में झाड़ू की सेवा कर रहे होंगे तो इस को राज कुमार वाले कपड़े पहना कर इस का पैर उनके झाड़ू पर रखवा देना। उस ने ऐसा ही किया। भाई साल्हो जी ने कहा,'' बेटा, ध्यान से चला करो'' यह बचन होते ही वह

फिर लड़का बन गया। भाई साल्हो जी ने कहा, ' राजा जी, तुम्हारे पर गुरू जी की बहुत कृपा

हुई है। हमारे जैसे सेवकों को तो वह ऐसे ही सम्मान दिलवाते रहते हैं। जाओ, एक झाड़ू ले आओ। आप भी सेवा करो और राज कुमार से भी करवाओ। यह बच्चा बहुत तेज प्रतापी राजा होगा। राजे ने प्रसन्न हो कर भाई साल्हो जी के चरण स्पर्श करते हुए कहा कि यही एक ऐसा स्थान देखा है जहां सेवकों की जुबान पर भी प्रभु निवास करते हैं। जो वह कहते हैं वह सच हो जाता है।

ऐसी करनी वाले सेवक भाई साल्हो जी का जन्म 29 सितम्बर, 1554 ईसवी को मालवे के एक छोटे से कसबे धौला कांगढ़ {अब जिला मुक्तसर में} में हुआ। पिता जी का नाम भाई दयाला जी और माता जी का नाम सुखदेई जी था। यह धालीवाल जाटों का परिवार था। वह खेतीबाड़ी करते थे। धार्मिक तौर पर वह लालां वाले पीर के उपासक थे। यह उसी निगाहे वाले पीर का ही दूसरा नाम है। यह और भी बहुत से नामों से मशहूर है जैसे धौंकलिया पीर, सुलतान, सखी सरवर आदि। बालक साल्हो को वह पीर की बख्शिश से हुआ मानते थे। इसी लिए उस को बचपन से ही पीर की भक्ति में लगाना चाहते थे परन्तु बालक साल्हो का ध्यान ढोल डग्गे के शोर में जुड़ता नहीं था। वह तो एकांत पसन्द था। दूर खेतों में अकेले ही आंखें बन्द करके किसी मस्ती में बैठा रहता था।

बालक साल्हो बचपन से ही बहुत तेज बुद्धि वाला था। एक बार पिता जी ने नए उगाये बाजरे की खेती की रक्षा के लिए बिठा दिया। वह डंडा ले कर खेत में चिड़ियों को उड़ाने लगे पर फिर उन्होने सोचा कि इस तरह वह परमात्मा के हुक्म की अवज्ञा कर रहे हैं क्योंकि वह चिड़ियों के लिए प्रभु द्वारा दिया गया भोजन खाने नहीं दे रहे, दूसरा वह बेकार खेत में घूम कर अपना मस्ती भरा समय खराब कर रहे हैं। इस लिए वह दौड़ कर घर से बाजरे का थैला, कुछ कटोरियां ले आये। इन में से कुछ में बाजरा और कुछ में पानी डाल कर उन्होने खेत के आस-पास रख दिये। नतीजा यह हुआ कि पक्षियों द्वारा खेत का कोई नुकसान ना हुआ। बल्कि पक्षी कटोरिया में से ही दाना पानी लेते रहे। उनकी इस स्कीम को गांव के अन्य लोगों ने भी अपनाया। पिता भाई दयाला जी अपने पुत्र की दयालुता से बहुत प्रसन्न थे कि बालक साल्हो ने खेत की रखवाली के साथ-साथ पक्षियों के भोजन का भी प्रबन्ध कर दिया है।

यह समय पठानों और मुगलों में राजसी विरोध का है। एक तरफ मुगल बादशाह मोहम्मद जलालुदीन अकबर है तो दूसरी ओर पठान शहनशाह शेरशाह सूरी है। अलग-अलग इलाकों मे कब्ज़ा करने के लिए वह आपस में लड़ते रहते थे। इन दोनों की राजसी लालसा का नतीजा यह हुआ कि भाई साल्हो जी का नगर धौला कांगढ़ भी लड़ाई की चपेट में आ गया। मुगलों की जीत हुई। अकबर की सेना ने नगर को खूब लूटा। भाई साल्हो जी के माता पिता अपना बचा खुचा

सामान लेकर 'गुरू के चक्क' के नज़दीक लगते नगर मजीठा में आ कर बस गये। बालक साल्हो ने अपने पड़ौस में खेलते समय यह सुना कि 'गुरू के चक्क' में गुरू राम दास साहिब जी सरोवर की सेवा करवा रहे हैं। वह अपने माता पिता को 'गुरू के चक्क' ले जाने के लिए जोर देने लगा। कुदरती इन्हीं दिनों में पीर का सलाना उत्सव भी आने वाला था। इस लिए उन्होने निगाहे को जाते हुये कुछ दिन 'गुरू के चक्क' रुकने का फैसला किया। भाई दयाला जी ने भी गुरू घर की महिमा तो पहले ही सुन रखी थी पर गये कभी नहीं थे। अब 'गुरू के चक्क' जाने के फैसले के साथ-साथ गुरू जी ने उनके मन में यह विचार उत्पन्न कर दिया कि अगर उनको आवाज़ देकर बुलाया तो वह पूरे गुरू जी होंगे। गुरू जी की मौज, कि यही विचार माता सुखदेई जी ने भी अपने मन में बना रखा था। मगर दोनो ने इस के बारे में एक दूसरे के साथ कोई बात नहीं की और सोचा अगर गुरु साहिब जी ने बुलाया तभी एक दूसरे को बतांएगे। दरअसल उनको यह भरोसा ही नहीं था कि इस तरह होगा। अभी उन्होने पहले दिन ही सेवा की थी कि शाम को गुरू राम दास साहिब, सोढी पातशाह जी खुद आप आज हुई कार सेवा का जायज़ा लेने के लिए आ गये। अर्न्तयामी पिता ने उनसे आकर कहा, 'आओ भाई मजीठे वालो, भुलेखे दूर कर लो। लखदाते पीर की यात्रा तो हर साल करते ही रहे हो, अब गुरू घर की सेवा किया करो।' गुरू राम दास साहिब जी के मुख से मीठे बोल सुन कर भाई दयाला जी का हृदय शांत हो गया। उसी समय उन्होने गुरू चरणों पर अपना सिर रख दिया। जब गुरू साहिब जी उनको थापड़ा देकर चले गये तो माता सुखदेई जी ने अपने मन के विचार के बारे में बताया। भाई दयाला जी बोले कि मैने भी यही सोच रखा था। बस एक ही पल में श्रद्धा इतनी बन गई कि पिछले 30 सालों की पीर की भक्ति का रंग दूसरे ही पल उड़ गया। एक महीना वह 'गुरू के चक्क' में ही सेवा करते रहे। सत्संगत करते। सिमरन करते। इन दिनों में गुरू जी बालक साल्हो की जुड़ी बिरती को निहारते रहते। एक महीने बाद उन्होने गुरू जी से जाने की आज्ञा मांगी। गुरू साहिब जी ने बालक साल्हो को वहीं छोड़ जाने का हुक्म दिया। इस हुक्म से जहां बालक साल्हो की खुशी का ठिकाना ना था वहीं उस के माता पिता ने भी इसे अपना सौभाग्य समझा। बालक साल्हो गुरू साहिब जी के पास रह कर सेवा और सिमरन में जुट गये।

समय बीतता गया। बालक साल्हो गुरूघर की सेवा करते, सिमरन करते और गुरू जी के हर बचन को सत्य करके मानते हुये जवान हो गये। उनकी सेवा और कमाई को देखते हुये सभी प्यार से उनको भाई साल्हो जी कहने लगे। गुरू रामदास साहिब जी ने उनको अपने महलों के पास ही रहने के लिए रिहाइश बनवा दी। महलों के नज़दीक रहने के कारण उनको गुरू जी के परिवार

की सेवा करने का मौका मिलता रहता था। भाई साल्हो जी की प्रीति और अधिक पक्की होती गई।

परमात्मा के हुक्म में 'रामदास गुरू जग तारन को गुर जोत अरजुन माहि धरी'॥{पावन अंग 1408} के महांवाक अनुसार गुरू राम दास साहिब जी ने जगत का पार निस्तारा करने की ज़िम्मेवारी गुरू अरजन साहिब जी को सौंप दी। भाई साल्हो जी अब गुरू अरजन साहिब जी की अगवाही में सेवा करने लगे। गुरू जी ने अपने पिता गुरू जी द्वारा आरम्भ की गई ताल की सेवा को जारी रखते हुये अमृत सरोवर को पक्का करने का हुक्म दिया। भाई भगतू जी, भाई पैड़ा जी, भाई बन्नो जी, भाई बहलो जी और भाई साल्हो जी की ईंटें तैयार करने की डयूटी लगाई गई। हुक्म अनुसार काम होना भी शुरू हो गया। पर कुछ ही दिनों बाद बारिश की झड़ी लग गई। ईंटों के आवों के लिए ईंधन खत्म हो गया। भाई साल्हो जी ने साथ-साथ के गांवों में जा कर यह ढंढोरा पीटा कि गुरू साहिब जी के ताल के लिए जो भी सूखा ईंधन या एक पाथी भी देगा तो उसको पुत्र की प्राप्ति होगी। इस ढंढोरे को सुन कर तो 'गुरू के चक्क' में लोगों ने पाथियों के ढेर लगा दिये। जब गुरू साहिब जी को इस बात का पता चला तो वह भाई साल्हो जी की सकीम से प्रसन्न तो बहुत हुए, और साथ ही थापड़ा देते हुए कहा, 'भाई साहिब जी, सुना है आप ने पुत्र बहुत सस्ते भाव में लगा दिये?' फिर अगले ही पल बोले, 'चलो लगा दिये तो लगा दिये। अब आप का बचन तो मोड़ा नहीं जा सकता।' आज भी लोग भाई साल्हो जी के स्थान पर पाथियां चढ़ा कर 'पुत्रों की दात' प्राप्त करते हैं।

जब अमृत सरोवर सर्म्पूण हुआ तो गुरू अरजन साहिब जी ने सभी निकटवर्ती सिखों को बुलाकर हुक्म दिया कि अब शहर की आबादी बढ़ाने की तरफ ध्यान दिया जाये। व्यापारियों और कारीगरों को बाहर से बुला कर बसाया जाये। इस काम में सबसे अधिक योगदान भाई साल्हो जी का रहा। वह 52 प्रकार के कारीगरों को प्रेरणा दे कर रामदास पुर लाये। अब 'गुरू के चक्क' को रामदास पुर कहा जाने लगा। व्यापारियों और कारीगरों के आने से शहर की आबादी बहुत बढ़ गई। व्यापारियों ने अपनी दुकानों के थड़े बाहर की तरफ बढ़ाने शुरू कर दिये। भाई साल्हो जी देख रहे थे कि बाहर से आने वाले यात्रियों को इस से तकलीफ हो रही है। अन्धेरे में किसी को चोट भी लग सकती है। वह दूर की भी सोच रहे थे कि आने वाले समय में मुश्किलें और भी बढ़ जायेगी। इस लिए उन्होने एक दिन संगत को साथ लेकर सारे थड़े तोड़ दिये। भाई साल्हो जी को रोकने की किसी की भी हिम्मत ना पड़ी। परन्तु अगले दिन व्यापारियों ने गुरू साहिब जी के पास जा कर भाई साल्हो जी की शिकायत कर दी। गुरू साहिब जी ने उनको व्यापारियों के सामने ही बुला लिया। भाई साल्हो जी ने कहा, 'सच्चे पातशाह, आप जी अर्न्तयामी हो, यहां तो

व्यापार की बहुत बड़ी मंडी बननी है। आप की कृपा से करोड़ों के सौदे होने हैं। रास्ते तंग न हो जाएं इस लिए सब की दुकानों के आगे बनाये थड़े तोड़े गये हैं।' गुरू साहिब जी ने व्यापारियों को समझाया कि भाई साल्हो जी का बचन हमेशा पूरा होता है। यह तो तुम्हारा भला ही सोच रहे हैं। आज देखो, गुरू साहिब जी की कृपा से भाई साहिब जी के बचन सच हो रहे हैं। अमृतसर के हर बाज़ार में हर रोज़ करोड़ों का व्यापार हो रहा है। भाई साल्हो जी द्वारा अमृतसर के बाज़ारों में दुकानों के बाहर बनाये थड़ों को तोड़ने की कार्यवाही और इस के पीछे की सूझ-बूझ को गुरू जी ने इतना पसन्द किया कि उनको अमृतसर का कोतवाल बना दिया।

भाई साल्हो जी को यह भी सम्मान प्राप्त है कि वह गुरू अरजन साहिब जी की माता गंगा जी के साथ हुई शादी के समय भी बारात में शामिल हुए। {गुरू} हरगोबिन्द साहिब जी की बारात में भी वह शामिल हुए। बारात तीन दिन सुलतानपुर लोधी के पास गांव डल्ले में रही। विवाह कार्य सर्म्पूण होने पर गांव निवासियों ने पानी की कमी का ज़िक्र करके बाउली बनवाने की बेनती की। गुरू अरजन साहिब जी ने बाउली का टक लगा कर पांच ईंटें खुद अपने हाथ से रखीं। साथ ही भाई साल्हो जी को हुक्म दिया कि आप बाउली बनने के बाद ही अमृतसर आना। गुरु जी के हुक्म अनुसार उन्होने बहुत जल्दी बाउली का निर्माण करवा दिया। सम्पूर्णता के बाद वह सीधे गुरू साहिब जी के पास अमृतसर गये। गुरु साहिब जी को बाउली तैयार होने के बारे में बताया। गुरू जी बहुत प्रसन्न हुये। उन्होने भाई साल्हो जी को अपने पास बिठाया और महान भक्त होने का वर दिया।

भाई साल्हो जी ऐसे ब्रह्मज्ञानी गुरसिख थे जिनकी महानता की बहुत सारी कथाएं हैं। हम यहां केवल दो का ज़िक्र करेंगे। एक बार लंगर में एक जोगी आ गया। इस के पास एक करामाती कमंडल था। इस की यह खासीयत थी कि इस में जो मर्जी डाल दो यह भरता ही नहीं था। कमंडल तो भरता नहीं था, पर जोगी पूरा हौमैं या अंहकार से भरा पड़ा था। जब इस ने गुरूघर के लंगर में कदम ही रखा था तो उस ने उसी समय से शोर डालना शुरू कर दिया कि सिख गुरु के लंगर की बहुत महानता बताते हैं कि यहां से कभी कोई खाली नहीं जाता। आज देखते हैं कि एक जोगी का कमंडल भरता है कि नहीं। उसने अंहकार से भरे बोल बोले कि आज गुरू के सारे पतीलों और जोगी के एक कमंडल का मुकाबला है। जोगी जान-बूझ कर आया भी रात को था क्योंकि उस समय सारी संगत लंगर छक चुकी थी। सेवादार जोगी की बातें सुन कर परेशान हो गया। उसने भाई साल्हो जी को बुला लिया। सेवादार ने सारी बात भाई साहिब को बताई। भाई साल्हो जी ने धन गुरू रामदास जी का ध्यान करके मूल मंत्र का पाठ करते हुए पतीले में से दाल की बाल्टी भर ली। दूसरी बाल्टी में चावल डाल लिए। भाई साल्हो जी दोनो बाल्टियां जोगी के पास

ले गये। उन्होने जोगी से कहा कि भाई तेरा बर्तन तो बहुत छोटा है। पहले चावल डालूं या दाल? जोगी बोला कि बाबा, अपने गुरू को बुला ले, आज यह छोटा बर्तन तुम से नहीं भरा जाएगा। भाई साल्हो जी ने नम्रता से कहा कि जोगी जी, यह धन गुरू रामदास जी का दरबार है। यहां हर समय गुरू जी हाज़िर रहते हैं। आप बताओ, दाल डालूं या चावल? जोगी बोला, 'पहले दाल ही डाल दे बाबा' भाई साल्हो जी ने बाल्टी में से केवल दाल की एक ही कलछी डाली थी कि उस का कमंडल ऊपर तक भर गया और दाल बाहर गिर गई। जोगी ने कमंडल उठा कर देखा, कहीं यह बदल तो नहीं दिया गया। परन्तु कमंडल तो वही था। जोगी बहुत शर्मिंदा हुआ। भाई साल्हो जी ने कहा, ' भाई, तू तो पतीलों की बात करता था, तेरा बर्तन तो गुरू के लंगर की आधी कलछी से ही भर गया। बाद में भाई साल्हो जी ने समझाया कि धार्मिक बन्दों को अभिमान वाली बातें नहीं करनी चाहिए। यह गुरू राम दास साहिब जी का दरबार है। यहां जो मांगो, वह मिलता है। दाल-रोटी का प्रबन्ध तो प्रभु ने पत्थर में बसने वाले कीड़ों का भी किया हुआ है। भाई साल्हो जी के बचनों का उस जोगी पर ऐसा असर हुआ कि वह रोज़ आकर जूठे बर्तनों की सेवा करता रहा।

लोहगढ़ दरवाजे के पास बाहर-बाहर एक अलमस्त फकीर सैयद फतेह शाह बुखारी का डेरा था। यह भाई साल्हो जी की रिहाइश के नज़दीक ही पड़ता था। बुखारी जी की भाई साल्हो जी के साथ दोस्ती थी। वह कभी कभी भाई साहिब के पास आ जाते थे। आध्यात्मिक विचार करते रहते थे। एक दिन देर रात को सैयद जी दो तीन सेवकों के साथ भाई साल्हो जी के पास आये और कहा कि डेरे पर बहुत सारे मुरीद आ गये हैं। दूध की ज़रूरत है। भाई साहिब ने कहा कि इस समय दूध तो नहीं है। आप यह बकरी ले जाओ। इस के दूध से आप का काम चल जायेगा। बुखारी जी ने बकरी और सेवकों को डेरे पर भेज दिया। आप खुद दूध का इंतज़ाम करने के लिए चले गये। उन्होने सोचा कि भाई साल्हो जी ने मज़ाक किया है। डेरे पर जाकर सेवकों ने बकरी को दोहना शुरू किया तो सारे बर्तन दूध से भर गये। जब सेवकों ने बुखारी जी को ढूंढ कर यह बताया कि बकरी ने तो सारे बर्तन दूध से भर दिये हैं तो बुखारी जी बहुत शर्मिंदा हुए। अगले दिन बुखारी जी ने भाई साल्हो जी से माफी मांगी और कहा कि मैंने तो सोचा था कि आप ने मज़ाक किया है। भाई साल्हो जी ने कहा कि सैयद जी, हमने तो कभी अल्लाह के बन्दों के साथ भी मज़ाक नहीं किया, आप तो फिर अल्लाह के भक्त हो।

धन गुरू अरजन देव साहिब जी अपनी मौज में कभी कभी अपने महलों में से उठ कर भाई साल्हो जी के निवास पर चले जाते थे। जब कभी भी गुरू जी आते, भाई साहिब अपने घर के कुंऐ से पानी निकाल कर राहगीरों को पिला रहे होते। गुरू जी ने एक दिन कहा कि सारा दिन

तो गुरूघर में सेवा करते हो। सत्संग करते हो। नितनेम करते हो। हमारे महलों में भी सेवा करते हो। कुछ आराम भी कर लिया करो। भाई साल्हो जी ने कहा, 'गुरूघर की सेवा से तो कभी थकावट नहीं होती, सच्चे पातशाह। गुरू जी ने कहा कि आप धन्य हो भाई साल्हो जी। आप के ऊपर गुरू पिता जी की अपार कृपा है। एक दिन गुरू जी ने कहा कि आप के घर के पास नीची जगह पर, जहां पानी खड़ा रहता है, वहां सरोवर बनवा दें? भाई साल्हो जी ने कहा, ' सतगुरू, सरोवर तो गुरूघर में ही अच्छे लगते हैं। इसको टोभा ही रहने दो। गुरू जी ने उनकी नम्रता को देखते हुये उनके टोभे को वर दिया कि श्रद्धा के साथ जो माता पिता सोके के रोग से ग्रस्त बच्चों को यहां स्नान करवांएगे उनको इस रोग से मुक्ति मिल जाएगी। गुरू जी के यह बचन आज भी सत्य हो रहे हैं।

भाई साल्हो जी अथाह सेवा करके सेवा का ही रुप हो गये। गुरू अरजन साहिब जी के बाद गुरू हरगोबिन्द साहिब जी भी उनको बहुत प्यार करते थे। गुरूधर की सेवा करते करते वह 24 सितम्बर 1628 ईसवी को शरीर रूपी चोला छोड़ कर प्रभु के चरणों में जा बिराजे। गुरू हरगोबिन्द साहिब जी ने भाई साल्हो जी का संस्कार अपने हाथों से किया।

प्यार के साथ बोलो जी :

धन गुरू राम दास साहिब जीं

धन भाई साल्हो जी।

****

भाई बिधी चन्द जी

गर्मियों का मौसम है। सूरज तपा रहा है। ज्येष्ठ आषाड़ की गर्मी है। समय है कोई दोपहर दो बजे का। गांव का नाम है भैणी। {अब चोहला साहिब} लोग अपने अपने घरों में घुसे हुये हैं। एक साढे छः फुट कद का जवान जिसने सिर पर पटका सा बांधा हुआ है, गांव के बाहर बनी एक कुटिया का दरवाज़ा खटखटाता है। अन्दर से एक दूध जैसे सफेद वस्त्रों वाले बुर्ज़ुग दरवाज़ा खोलते है। जिन के चेहरे पर रुहानी चमक है। दरवाज़ा खुलते ही बाहर खड़ा इन्सान, जो घबराया हुया है, हाथ जोड़ कर विनती करता है, 'बचा ले बाबा, मुझे आज बचा ले!' कोई सवाल किये बिना ही वह उस जवान को अन्दर ले जाते हैं और पूछते हैं, 'हां भाई, बोल क्या तकलीफ है तुझे?' थोड़ा राहत महसूस करते हुये वह बोला, 'मैं एक चोर हूं। साथ वाले गांव से कुछ भैंसे खोल कर ले आया हूं, जो मैंने सामने वाले तालाब में छोड़ रखी हैं। परन्तु गांव के लोगों को पता चल गया है। वह तलवारें, लाठियां लेकर मुझे मारने के लिए आ रहे हैं। आप कृपा करके मुझे बचा लो। अपने बचाव की बेनती करने वाले का नाम है - बिधी चन्द। इस का जन्म सुर सिंघ गांव में हुआ। लोग बिधिआ कह कर पुकारते हैं। पिता का नाम वस्सण सिंह, जो छीने गोत के जाट हैं। बिधिया बड़े कद वाला और दिलेर है परन्तु अब निहत्था है। इस के नानके सरहाली गांव में हैं। यहां कुछ समय रहने के कारण ही यह बुरी संगति में पड़ गया है। यहां से ही इस को चोरी की आदत पड़ गई है।

बुर्ज़ुग बाबे का नाम भाई अदली है। भाई अदली जी गुरू अरजन देव साहिब जी के कमाई वाले सिख हैं। नाम-बाणी में रंगी हुई आत्मा और पूर्ण अभ्यासी। यह गुरू राम दास साहिब जी के समय से सिखी में आए थे। उस समय से ही गुरूघर के साथ जुड़ कर गुरमति को धारण किया है। भाई अदली जी ने कहा कि गुरू अरजन साहिब जी का फुरमान है :

'जो शरण आवै तिस कंठ लावै, एहो बिरद सुआमी संदा॥ {पावन अंग 544}

गुरू जी ने आप ही कौतुक रच कर तुझे अपने गले लगाने के लिए मेरे पास भेजा है। तूं बैठ जा चौंकड़ा लगा कर। चित जोड़ गुरू अरजन देव साहिब जी के चरणों में। सिमरन कर वाहेगुरू का। साथ ही तौबा कर कि आगे से बुरी संगत नहीं करेगा।

मरता क्या ना करता। भाई अदली जी की शख्सियत से प्रभावित बिधी चन्द इसी तरह करने लग गया। सब जानते हैं, दुख में फंसा हुआ व्यक्ति जल्द ही परमात्मा को याद करने लग जाता है। चाहे वो परमात्मा को माने या ना माने। सोचता यही है कि शायद प्रभु मददगार हो जाये। पर बिधी चन्द का तो गुरू जी ने जीवन ही बदलना था। उसकी बेनती सुनी गई। गुरू जी ने उसकी लाज रखी। करिश्मा ऐसे हुआ, जो लोग उसके पीछे आ रहे थे, उन्होंने आ कर भाई अदली जी से पूछा कि इधर से कोई व्यक्ति भैंसे लेकर निकला तो नहीं? हमारी भैंसे उसने चोरी की हैं। भाई अदली जी ने बड़ी नम्रता से कहा, 'आगे जाते तो कोई नहीं देखा, सामने तालाब में कुछ भैंसे इस व्यक्ति ने छोड़ी हैं। इन में से अपनी पहचान लो।' 'इन में हमारी नहीं हैं, यह तो भूरी हैं। हमारी भैंसे तो काली हैं।' आये लोग सारे इकट्ठे ही बोले और वापिस चले गये। इलाके के लोग भाई अदली जी का बहुत सम्मान करते थे। उन्होंने बिधी चन्द की तरफ देखा तक नहीं। उधर लोग वापिस गये, इधर बिधिआ बाहर की ओर दौड़ा। काली भैंसे भूरी बनी हुई देखने के लिए। अपनी आंखों से इस कौतुक को देख कर उसी तरह दौड़ा आया। हैरान परेशान है, एक सिख की शक्ति देख कर। सोचा, इस के गुरू कितने शक्तिवान होंगे? आते ही भाई अदली जी के पैरों पर सिर रख दिया। मुंह से अपने आप ही 'धन गुरू अरजन देव साहिब जी - धन गुरू अरजन देव साहिब जी' बोल निकल रहे हैं। भाई अदली जी ने उसको उठाया और हुक्म दिया कि रात को सारी भैंसे गांव की जूह पर छोड़ देना, वह अपने अपने ठिकाने पर चली जायेंगी। सुबह अमृतवेले हम अमृतसर के लिए चलेंगे, गुरू अरजन साहिब जी के दरबार में दर्शन करने के लिए।

ज्ञानी ज्ञान सिंघ द्वारा रचित ग्रंथ 'तवारीख गुरू खालसा' में लिखा है,'जब भाई अदली जी ने इस को गुरू जी के समक्ष पेश किया तो इस ने अपना पेशा चोरी बताया और बेनती की कि सच्चे पातशाह,' आप मुझे अपना चोर सिख ही बना कर रख लेना'। गुरू जी उसकी बेनती और बेनती करने के ढंग पर हंस पड़े। आंखें मूंद ली और कुछ समय तक अर्न्तयामता की अवस्था में रहे। फिर नज़रें भर कर बिधी चन्द को देखा और बोले ,' वाहेगुरू का जाप करना है। परोपकारी जीवन व्यतीत करना है। सच को दृढ़ करके पल्ले बांधना। संगतों की सेवा करना। सुख शांति के लिए कोई बुरा काम नहीं करना।'

भाई बिधी चन्द ने यह बचन अपनी बाकी बची उम्र तक कमाए। वह गुरू दरबार की सेवा और नाम की कमाई में जुट गये। कुछ समय वह सेवा में रहते और कुछ समय अपने गांव सुर सिंघ चले जाते। जब कभी गुरू दरबार में आते तो वहां से कुछ संगत को अपने साथ दर्शन करने के लिए ले आते।

समय बीतता गया। गुरूघर के अपने अन्दर से और गुरूघर के बाहर से दुश्मनों ने अपनी चालें चलीं। जहांगीर ने भी उनकी बातों में आ कर गुरू अरजन साहिब जी को असह और अकह कष्ट देकर शहीद करवा दिया। गुरू साहिब जी खुद आप प्रभु की रज़ा में रहे। बाबा बुड्ढा जी, भाई गुरदास जी और सांई मीयां मीर जी द्वारा सारी संगत को प्रभु की रज़ा में रहने का उपदेश दिया। गुरू साहिब जी के हुक्म अनुसार बाबा बुड्ढा जी ने गुरू हरगोबिन्द साहिब जी को गुरूगद्दी का तिलक लगाया। गुरू साहिब जी ने मीरी-पीरी की दो तलवारें पहनी। भक्ति और शक्ति का सुमेल किया। श्री अकाल तख्त साहिब की रचना की। संगतों को हुक्मनामे भेजे,''आज के बाद बढ़िया किस्म के घोड़े भेंट किए जायें। बढ़िया शस्त्र भेंट किए जांये। ताकतवर जवान, जिन्हें मरने का भय ना हो, अपने आप को भेंट करें''। गुरू साहिब जी के इस हुक्मनामे पर भाई बिधी चन्द ने भी फूल चढ़ाये। अपने गांव से 52 ताकतवर जवानों को लेकर आया। नत्था और अबदुल्ला दो ढाढियों को भी साथ लेकर आया।

गुरू अरजन साहिब जी की शहीदी से सिखों में कुछ अजीब किस्म की खामोशी छा गई थी। माहौल वैराग्यमयी बन गया था। पर गुरू हरगोबिन्द साहिब जी के इस ऐलान से सिख फिर चढ़दी कला वाले बनने लगे। दूसरी तरफ जहांगीर ने भी अपनी फौज की भर्ती में धार्मिक नीति अपना कर तबदीली कर ली और पठानों को फौज में से निकाल दिया। इन फौज से निकाले हुए पठानों ने गुरू साहिब जी को अपनी सेवांए भेंट कर दी। मुसलमान राजाओं द्वारा सताये हुये हिन्दुओं ने भी मरने जीने की परवाह ना करते हुये खुद को भेंट कर दिया।

इन्हीं सारे कारणों की वजह से योद्धाओं की गिनती बहुत बढ़ गई। गुरू जी ने फौज की नीति अपनाई। सारे योद्धाओं को पांच हिस्सों {जत्थों } में बांट दिया। भाई लंगाह, भाई बिधी चन्द, भाई पिराणा, भाई पिरागा, और भाई जेठा जी को जत्थेदार बनाया गया। इन सभी टुकड़ियों {जत्थों } को अलग-अलग काम सौंपे गये। भाई बिधी चन्द के जत्थे को दुश्मन में भगदड़ मचाने की जिम्मेंदारी सौंपी। गुरू जी ने उनको गुरिल्ला युद्ध करने की कला में निपुणता हासिल करने का हुक्म दिया। भाई बिधी चन्द इतने हाज़िर दिमाग थे कि एक ही पल में योजना बना लेते थे, इस लिये सारी फौज को भाई बिधी चन्द की अगवाही में जंगल में जाकर अभ्यास करने का हुक्म गुरु साहिब जी द्वारा दिया गया।

गुरूघर के दुश्मनों ने बादशाह जहांगीर के पास गुरू हरगोबिन्द साहिब जी की शिकायतें की कि गुरू जी ने दिल्ली से भी ऊंचा तख्त बना लिया है। वहां बैठ कर वह राजाओं की तरह फैंसले करते हैं। फौज भी रखी हुई है। इन शिकायतें के कारण बादशाह जहांगीर ने गुरू हरगोबिन्द

साहिब जी को ग्वालियर के किले में कैद कर दिया। बाबा बुड्ढा जी ने बादशाह के इस घिनौने कार्य को संसार में प्रकट करने और इस के विरोध में रोष जताने का फैसला किया। उन्होंने एक शब्दी जत्था तैयार किया। खुद अगवाही करते हुये अमृतसर से ग्वालियर तक शब्द गायन करते हुये पैदल गये। इस रोष मार्च को उन्होंने 'चौंकी' का नाम दिया। गुरू जी ने उनके इस प्रयत्न की बहुत प्रंशसा की और इसे आगे भी जारी रखने का हुक्म दिया।

गुरू जी के हुक्म अनुसार उन्होने हर रोज़ एक शब्दी जत्था ग्वालियर तक भेजने का फैसला किया। इस कार्य के लिये उन्होंने भाई बिधी चन्द और भाई गुरदास जी से सेवाएं लीं। भाई बिधी चन्द ने पूरी योजना तैयार की। उन्होने सलाह दी कि सब से पहले वह कुछ सिखों और एक ढाढी जत्थे को लेकर किसी गांव या नगर में जायेंगे। वहां वह जोशीली वारों से संगतों को एक जगह इकट्ठा कर लेंगे। फिर भाई गुरदास जी और बाबा बुड्ढा जी बारी-बारी उस स्थान पर पहुंच कर बादशाह जहांगीर द्वारा की गई इस बुरी हरकत को बताकर लोगों को ग्वालियर भेजने के लिए शब्दी जत्था तैयार करेंगे। इतनी देर में उन का जत्था अगले गांव जा कर दीवान लगाएगा। बाबा बुड्ढा जी को यह स्कीम बहुत पसन्द आई। इस तरह वह एक ही दिन में 5-6 गांवों में प्रचार कर लेते थे। इस स्कीम का ही नतीजा था कि बाबा बुड्ढा जी प्रति दिन अरदास करके चौंकी के रूप में एक बड़े जत्थे को ग्वालियर भेजते रहे।

भाई बिधी चन्द की दिलेरी, हाज़िर दिमागी, भरोसे एवं गुरबाणी के प्रति प्रेम को देखते हुये उन को यह सम्मान मिला कि जब गुरू साहिब जी ग्वालियर से रिहा होकर वापिस आये तब गुरू हरगोबिन्द साहिब जी ने भाई बिधी चन्द को अपना अंग रक्षक चुन लिया। उन्होंने यह डयूटी बड़ी चुस्ती फुर्ति से निभाई। गुरू जी के साथ अंग रक्षक की डयूटी करते हुए वह हर समय गुरबाणी का कोई ना कोई शब्द बोलते रहते या वाहेगुरु सिमरन करते रहते। एक दिन गुरू साहिब जी के आराम करने के समय जब वह पंखे की सेवा कर रहे थे तो उन्होने गुरू जी को बेनती की, 'सच्चे पातशाह, पोथी साहिब की बीड़ें बहुत कम हैं और सैंचीआं भी नहीं मिलती। संगतों को गुरबाणी पढ़ने में बहुत कठिनाई होती है। गुरू जी ने उसी समय बेनती मान कर उन को हुक्म किया कि अपनी निगरानी में गुरबाणी की सैंचीआं तैयार करवा के संगतो में बांट दो।

बादशाह जहांगीर ने गुरू जी की रिहाई के बाद पश्चाताप करने की वजह से चन्दू को उनके हवाले कर दिया। तब उन्होने चन्दू को सजा देने के लिए भाई बिधी चन्द और भाई जेठा जी को सौंप दिया। नाक में नकेल और गले में जंजीर डाल कर जानवरों की तरह उसे लाहौर

ले आये। लाहौर के बाज़ारों में उसे घुमाया गया। लोगों ने थू-थू की। पूरे लाहौर में घुमाते हुये गुरदित्ते भठियार {भट्ठी में दाने भूनने वाले भठियार को भड़भूंजा भी कहा जाता है} की भट्ठी पर ले गये। इस से गर्म रेत के कलछे चन्दू के सिर में डलवाये। फिर गुस्से में वही गर्म कलछा उसके सिर पर मार दिया। इस तरह सब के सामने चन्दू को सजा दी गई। {पाठकों की जानकारी के लिए यह भी बता दें कि चन्दू ने इसी गुरदित्ते भठियार से जबरदस्ती रेत गर्म करवा कर धन गुरू अरजन साहिब जी के शीश पर डलवाई थी। गुरदिता खुद यह काम करने के लिए तैयार नहीं था}

प्रिथी चन्द का पुत्र सोढी मेहरवान था। उसकी दोस्ती सुलही खां के पुत्र जमाल खां के साथ थी। जमाल खां लाहौर का कोतवाल था। एक बार बादशाह शाहजहां लाहौर आया मेहरवान ने अपनी दोस्ती का फायदा उठाते हुये जमाल खां द्वारा गुरू घर की आधी जायदाद दिलवाने के लिए बादशाह शाहजहां को फरियाद की। तब गुरू जी ने भाई बिधी चन्द और भाई गुरदास को भेजा कि मेहरवान को समझाओ। भाई बिधी चन्द को यह इजाजत भी दे दी कि अगर नहीं समझता तो उसे अपने तरीके से मति दे देना। जब यह मेहरवान को समझाने गये तो उस ने उनको बहुत बुरा भला कहा परन्तु यह शांत रह कर सुनते रहे। जब मेहरवान ने गुरू जी के बारे में बुरे शब्द बोले तो भाई बिधी चन्द ने ललकार कर कहा, 'चुप हो जा ओये! प्रिथिये के पुत्रा, मैं अभी तुझे फाड़ कर दो टुकड़े कर दूंगा। मेरे पास तो गुरू जी का हुक्म है कि तुझे अपने तरीके से मति दे दूं।' भाई गुरदास जी ने भाई बिधी चन्द को बहुत मुश्किल से शांत किया। वह तो उस को सुधारने के लिए उठ गये थे।

एक बार काबुल से गुरू साहिब जी के दर्शन करने आई संगत लाहौर में ठहरी हुई थी। लाहौर का सूबेदार अनाएत उल्ला खां था। उसके दरोगे सौंधे खां ने दो बढ़िया नस्ल के घोड़े संगत से छीन लिए और सूबेदार को खुश करने के लिए वह घोड़े उसे भेंट कर दिये। यह दोनो घोड़े, घोड़ों का सौदागर भाई करोड़ी मल गुरू साहिब जी के लिए लाया था। घोड़े एक ही रंग-रूप के थे। वह तैर भी सकते थे। घोड़े उसने गुरू जी के लिए बड़े चाव से स्वंय ही पाले थे। इनके नाम उसने दिलबाग और गुलबाग रखे हुये थे। भाई बिधी चन्द इतने सख्त पहरे के बावजूद भी शाही महलों के तबेले में से यह घोड़े वापिस ले आये। यह रोमांचक घटना इस तरह है-

गुरू हरगोबिन्द साहिब जी मालवे में सिखी के प्रचार करने के लिए कांगढ़ देश {गुरूसर सिधार} में ठहरे हुये थे। यहां पहुंच कर भाई करोड़ी मल ने लाहौर में घटी सारी घटना के बारे में गुरू जी को बताया। गुरू जी ने फुरमाया कि भाई सिखा, तेरी भेंट स्वीकार हुई। हम अपने घोड़े

मंगवा लेंगे। फिर संगत को सम्बोधन करके कहा,"है कोई ऐसा सिख जो शाही महलों के तबेले में से हमारे घोड़े ले आये।" संगत में जैसलमेर का राजा प्रताप सिंह भी बैठा था। उसने गुरू जी को विनती की कि इस काम के लिए भाई बिधी चन्द सब से योग्य है। भाई बिधी चन्द ने उठ कर कहा, 'सतगुरू जी, मुझ में क्या ताकत है। यदि आप मेरे सिर पर हाथ रखो, तो मुझे यह काम करने से कोई फौज नहीं रोक सकेगी। गुरू जी ने फुरमाया, "जाओ, जो चाहोगे उसी तरह होगा। गुरू नानक साहिब जी अंग-संग रहेंगे।" उसी दिन अरदास करके भाई बिधी चन्द लाहौर के लिए चल पड़े। प्रेम से गुरबाणी पढ़ते, सिमरन करते हुये वह पांचवें दिन लाहौर पहुंचे। अपना डेरा भाई जीवन के घर पर किया है। भाई जीवन गुरूघर पर भरोसा करने वाला सिख है। भाई बिधी चन्द ने उनको गुरू जी द्वारा लगाई सेवा, अपनी इच्छा और स्कीम के बारे में बताया। भाई जीवन ने पूरे विश्वास के साथ कहा कि यह गुरू साहिब जी का काम है, उन्होने खुद भेजा है, आप हो गया समझो। आप गुरु जी का नाम लेकर काम शुरू करो।

अगले दिन भाई बिधी चन्द ने बहुत बढ़िया हरी - हरी घास जपुजी साहिब का पाठ करते हुये खोदी। अच्छी तरह मिट्टी झाड़ी। साफ सुथरे कपड़े में गठड़ी बांधी और सिमरन करते हुये किले की दीवार के साथ जा बैठे। यहां और भी घसिआरे घास की गठड़ियां लेकर बैठे हैं। कुछ समय बाद शाही घोड़ों के तबेले का दरोगा सौंधे खां अपने सिपाहियों और सेवादारों के साथ बाहर आया। नये आए घसियारे की साफ सुथरी घास देख कर सेवादार को कहता है, 'वाह, क्या घास है, यह तो दिलबाग और गुलबाग खा ही लेंगे। भाई बिधी चन्द को पहले ही दिन सफलता की सीढ़ी का पहला डंडा दिखाई दिया। उसके साथ-साथ थोड़ी चिन्ता भी हुई कि गुरू साहिब जी के घोड़ों ने खाना पीना बन्द कर रखा है।

अब इस बात को अगर हम शक की नज़र से देखें कि घोड़ा तो जानवर है, वह गुरू जी के तबेले में हो या सूबेदार के तबेले में, उसको क्या समझ? वह खाना पीना क्यों छोड़े? उन्होने तो भूख के अनुसार मुंह मारना ही है। अगर भावना की नज़र से देखें तो भाई करोड़ी मल ने उनके जन्म से लेकर उनकी सेवा गुरू जी का नाम ले-ले कर और सिमरन कर-कर के की है। करोड़ी मल जी द्वारा बोली बाणी और सुनाई हुई गुरू जी की साखियों का असर ही था कि उन्होने खाना पीना छोड़ा हुआ था क्योंकि उनको जबरदस्ती अपने असली घर से तोड़ा गया था।

अगले दिन फिर भाई बिधी चन्द उसी तरह गुरबाणी का पाठ करते हुये घास खोद कर वहां ले जाता है। सौंधे खां के चेहरे पर खुशी देख कर समझ जाता है कि उसकी सेवा सफल हो गई है। पर अनजान बन कर पूछता है कि क्यों दरोगा जी, तुम्हारे घोड़ों {पट्ठों } ने दाना पानी

खा लिया या नही? 'हां भई हां' पहली बार खुश हो कर उन्होने सारा घास अपने आप खाया है। अन्यथा बहुत मुश्किल से थोड़ा सा खिलाना पड़ता था। भाई बिधी चन्द ने पल दो पल आंखें बन्द करके गुरू जी का शुकराना किया और अगले समय में भी की सहायता करने की अरदास की। सौंधे खां ने कहा कि ऐसा ही घास रोज़ अपने आप तबेले में पहुंचा दिया कर। भाई बिधी चन्द गुरू साहिब जी का कोटि-कोटि शुकराना कर रहे थे। अब वह रोज़ घास लेकर आते और तबेले में पहुंचा देते। कुछ दिनों में उनको और भी छूट मिल गई। घोड़ों को घास खुद ही डाल देते। प्यार के साथ पीठ पर हाथ भी फेर देते। सौंधे खां ने सारी बात सूबेदार को बता कर भाई बिधी चन्द को नौकर ही रखवा लिया। भाई बिधी चन्द जी घोड़ों की सेवा करते - करते पूरी खोज भी किया करते। बांवरा बनने का स्वांग भी रचते। सुनहरी हीरे मोतियों से जड़ी काठी को देख कर कहते, 'यह मक्की, चनों के दाने ऐसे ही काठी पर लटका रखे हैं, यहां कहीं घोड़ों का मुंह जा सकता है? अपनी बनाई योजना अनुसार रोज़ घास की गठड़ी में एक बड़ा सा पत्थर ले आते थे और आधी रात के समय किले की दीवार के साथ लगते रावी दरिया मे फैंक देते। पहले-पहले तो पहरेदारों ने शोर सुन कर कुछ ढूंढने की कोशिश की। पर रोज़ ही यही आवाज़ सुन कर उन्होने यह सोचा कि यह कोई दरियाई जानवर है जो किले की दीवार के साथ टकराता है।

सारा काम गुरू जी की कृपा से भाई बिधी चन्द की योजना अनुसार ठीक हो रहा है। आज तनख्वाह मिलने का दिन है। शाही तबेले के सभी कर्मचारियों और पहरेदारों ने पिछले दो तीन दिनों से भाई बिधी चन्द को पार्टी करने के लिए मज़बूर किया हुआ था। भाई बिधी चन्द ना ना करते हुये भी यही चाहते थे। आज जब सौंधे खां दरोगे ने पैसे हाथ पर रखते हुए पार्टी के लिए कहा तो भाई बिधी चन्द ने दसवन्ध की रकम निकाल कर बाकी सारी तनख्वाह पार्टी के लिए दे दी, साथ ही कहा, 'जो चाहो सो खाओ, इसी बहाने अपने मित्र को याद तो करोगे।' पैसे बहुत सारे। दावत पेट भर कर। नशा तेज। सब नशे में धुत गिरे पड़े हैं। कोई कहीं। कोई कहीं। भाई बिधी चन्द ने चाबियां निकाली। सब कर्मचारियों को एक कमरे में बन्द किया। घोड़े पर काठी डाली। जोड़े उतारे, हाथ जोड़े, आंखें बन्द करके सतगुरू जी के चरणों का ध्यान किया और अंग-संग रहने की अरदास की। भाई बिधी चन्द ने घोड़े पर चढ़ कर एड़ी लगाई। दूर से भगाते हुये किले की दीवार से छलांग लगा दी। एक बार तो घोड़ा पानी में नीचे गया पर दूसरे ही पल वह तैर रहा था। भाई बिधी चन्द शब्द पढ़ रहा था:

'हर का नाम रिदै नित धिआई', संगी साथी सगल तराई॥

गुर मेरे संग सदा है नाले, सिमर सिमर तिस सदा समाले॥ {पावन अंग 394 }

शाही तबेले के मदहोश कर्मचारियों में कोई हलचल नहीं हुई। अगर कोई पहरेदार कुछ होश

में था तो उसने वही आवाज़ समझी जो रोज भाई बिधी चन्द जी के पत्थर फैंकने की आती थी। सारा भेद तो सुबह उठ कर खुला। दिलबाग जा चुका था।

भाई बिधी चन्द रात को गुरबाणी गाता और सिमरन करता चलता रहा। दिन चढ़ने पर 'हरी के पत्तण' के पास एक गांव में एक सिख के घर पहुंच कर शरण लेता है। घोड़े दिलबाग को दाना पानी देकर आप भी थोड़ा आराम करता है। फिर प्रशादा छक कर दिलबाग की मालिश करता है। शाम को फिर आगे चल पड़ता है। पहर रात रहते 'गुरू सर सिधार' पहुंच जाता है। दीवान सजा हुआ है। रबाबी 'आसा की वार ' का कीर्तन कर रहे हैं। घोड़े दिलबाग को बाहर ही बांध कर भाई बिधी चन्द नमस्कार कर के बैठ जाता है। दीवान की समाप्ति के बाद गुरू साहिब जी उठते हैं। भाई बिधी चन्द को साथ लेकर घोड़े के पास आ जाते हैं। भाई बिधी चन्द और घोड़े दिलबाग की पीठ थपथपाते हैं। दिलबाग भी सिर नीचे करके प्यार ले रहा है। मानो शुकराना कर रहा है, गुरू जी के हाथों का स्पर्श मिलने का। भाई जेठा जी को बुलाकर दिलबाग की मालिश करने के लिये उनको सौंप दिया है। शाम के दीवान में सोदर के पाठ के बाद कीर्तन हुआ। बाद में भाई बिधी चन्द ने गुरू साहिब जी के हुक्म अनुसार सारी घटना के बारे में हू ब हू बताया। गुरू साहिब जी ने खुद उठकर भाई बिधी चन्द को थापड़ा दिया और कुछ मांगने के लिए कहा। भाई बिधी चन्द ने हाथ जोड़ कर अरज गुजारी कि मेरी एक मांग सदा पूरी करते रहना, सतगुरू जी: 'सतगुर का अंग। साध का संग। नाम का रंग। निश्चय अभंग।' सदा बन रहे। गुरू जी ने बख्शिश करते हुये थापड़ा दिया।

दूसरे दिन दरबार में आ कर भाई जेठा जी ने गुरू साहिब जी को नमस्कार करके बेनती की कि दिलबाग कुछ सुस्त है। उस समय गुरू जी के पास भाई जोध, भाई बिधी चन्द और राजा प्रताप सिंह बैठे हैं। गुरू जी सब को साथ लेकर तबेले में जाते है। दिलबाग को थापड़ा देते हैं। उसकी आंखों से पानी और तेज बहने लग जाता है। गुरू जी भाई बिधी चन्द की तरफ देख कर बोले,'तेरी सेवा परवान है। इस को बिछुड़ने का गम है। गुलबाग का भी वहां यही हाल है। अब या तो इस को उधर पहुंचा दे या उस को भी ले आ।' इससे पहले कि भाई बिधी चन्द कुछ कहते, भाई जोध बोले, 'सतगुरू, हम ने तो जोड़ी बनी हुई देखनी है, दिलबाग को वहां भेजने का बचन ना करो जी' भाई जेठा जी ने सहमति प्रकट की और कहा, 'भाई बिधी चन्द सब कुछ कर सकता है, चाहे तो शाहजहां को भी बांध कर ले आये।' राजा प्रताप सिंह बहुत समझदारी से बोले,' सतगुरू जी, एक के आने से दूसरे को लेकर आना बहुत कठिन हो गया है। शाही दरबार में अब पूरी सख्ती हो गई होगी। पहरा चार गुना बढ़ गया होगा। शाही तबेले में से घोड़े की चोरी होना सूबेदार के लिए इज्जत का सवाल बन चुका होगा। पर आपजी की कृपा से भाई बिधी चन्द सब कुछ कर

सकता है। गुरू हरगोबिन्द साहिब जी ने फुरमाया, ''हमारे लिए घोड़े की बात तुच्छ है पर संगत की बेनती सर्वोच्च है। भाई बिधी चन्द पर बड़े सतगुरू जी की अपार कृपा है। इस के द्वारा की गई सेवा और भक्ति ने इसको अथाह शक्ति प्रदान की हुई है।'' यह कह कर गुरू जी ने भाई बिधी चन्द को दूसरे घोड़े 'गुलबाग' को भी लाने का हुक्म दे दिया। भाई बिधी चन्द ने सिर झुका कर, हाथ बांध कर अरज गुजारी 'सतगुरू जी, करने करवाने वाले आप ही हो। मेरी क्या जुअरत है कि मैं कोई कदम भी अपनी मर्जी से उठा सकूं। आप मेरे अंग-संग रह कर अपना कार्य आप ही करवा लेना जी।'

गुरू साहिब जी का थापड़ा लेकर, अरदास करके भाई बिधी चन्द लाहौर के लिए रवाना हुआ। चौथे दिन लाहौर पहुंच गया। आगे शहर में मुनादी हो रही है कि जो भी ज्योतिषी, (Astrologer) फकीर या कोई व्यक्ति शाही महलों के घोड़े की या धोड़े ले कर जाने वाले की खबर देगा, उस को दस हजार रूपये का इनाम दिया जायेगा। शहर में पहुँचने से लेकर भाई बहोड़ू के घर तक कई मुनादी वाले यही बोल गुंजा रहे थे। भाई बहोड़ू ने भाई बिधी चन्द की सत्कार के साथ सेवा की। भाई बिधी चन्द की स्कीम अनुसार ज्योतिषी का वेश धारण करने का सारा सामान दो दिनों में तैयार करवा दिया। इन दो दिनों में भाई बिधी चन्द ने पूरे शहर का चक्कर लगा कर पूरी जानकारी और जासूसी हासिल कर ली। सौंधे खां घोड़ा गायब होने की वजह से बांवरा हुआ घूमता था।

दो दिन बाद भाई बिधी चन्द ने ज्योतिषी का वेश धारण कर लिया। एक सफेद कुर्ता पैरों तक डाला। एक आगे से खुले बटनों वाला जैकट जैसा कुर्ता डाला जो घुटनो से थोड़ा ऊपर तक का था। गले में ज़री वाला पल्ला। सिर पर 30 गज़ की मलमल के कपड़े की पगड़ी बांधी, जो ढाल की तरह बैठवीं थी। उसके दोनो तरफ तुरले छोड़े हुये थे। दाड़ी का दहीं से स्नान करवा कर दो हिस्सों में बांट लिया। माथे पर मुलतानी मिट्टी {गाचणी } लगा कर तीन लकीरें खींच ली। आंखों में बाहर की तरफ लम्बा काजल खींच लिया। हाथ में एक जंजीर और पोथी पकड़ ली। ज्योतिषी का ऐसा रुप धारण किया कि भाई बहोड़ू जी भी पहचान न सके। भाई बिधी चन्द ने जाने से पहले अरदास की, 'सतगुरू जी, अब मुंह से वही बोल निकलवा लेना जो पूछने वाले के दिल में हो'।

ऐसी ठाठ वाला ज्योतिषी जब बाज़ार में छोटे-छोटे कदम रखता चल रहा था, तो लोग उसके पहरावे और मस्तानी चाल को देख कर हैरान हो रहे थे। किसी शाही रियासत का ज्योतिषी मान कर लोग उस को सलाम और नमस्कार कर रहे थे। भाई बिधी चन्द सब को आर्शीवाद दे रहा था। भाई बिधी चन्द शाही किले के पास एक पीपल के पेड़ के नीचे बने हुये थड़े पर एक

रेशमी चादर बिछा कर बैठ गया। अपने सामने एक और छोटा सफेद रेशमी कपड़ा बिछा कर पोथी खोल ली हे। जंजीर को फैंकते तो कभी पोथी खोलते, फिर कभी जंजीर को सूंघते हुये भाई बिधी चन्द ऐसी अैकटिंग कर रहे थे कि लोगों की भीड़ जमां होनी शुरू हो गई। किसी के पूछने पर वह गुरू जी की कृपा से ऐसा अन्दाज लगाते कि वह ठीक ही होता। भीड़ इकट्ठी हुई देख कर सौंधे खां भी वहां आ पहुंचा। भाई बिधी चन्द यही तो चाहते थे। दरोगा को देखकर भीड़ थोड़ी पीछे हट गई। भाई बिधी चन्द बोले, 'साहिब को सलाम अरज़ है।' उसने पूछा, 'तुम कौन हो? कौन से देश से आये हो?' सौंधे खां को अपने रूप पर मोहित हुआ देख कर भाई जी ने गुरू जी का लाख-लाख शुकराना किया कि दरोगे ने उसे नहीं पहचाना। फिर एक अनोखे अंदाज़ में बोले, 'हम ने जानवर देश की जांगली विद्या हासिल की हुई है। अपने गुरू जी की सेवा करके हासिल किए इलम के अनुसार हम आगे-पीछे का (Past & Future) देख सकते हैं'। अब सौंधे खां बोला, 'मेरे दिल की बात भी जान सकेगा?' भाई बिधी चन्द बोले, 'दिलों की बातें बताने के लिए ही तो तेरे नगर आया हूं, जनाब जी।' भाई साहिब ने जंजीर को सौंधे खां का हाथ लगा कर नीचे फैंका। फिर उसको दो तीन बार सूंघा। असल में वह मन ही मन गुरू जी का ध्यान धर रहे थे। अचानक ही भाई बिधी चन्द को गुरू जी की कृपा से दिमाग में आया कि वह परीक्षा लेने के लिए पहले घोड़े की बात मन में नहीं धारेगा। पिछले महीने उसके नज़दीक रहने के कारण वह जान चुके थे कि सौंधे खां पुत्र की बीमारी के कारण परेशान रहता था। हो न हो, इसने मन में पुत्र के बारे में ही सोचा है। 'साहिब बच्चे की बीमारी के कारण परेशान रहते हैं।' भाई बिधी चन्द ने यह कहते हुये अपनी दृष्टि से उसका चेहरा पढ़ लिया कि पत्ता ठीक ही फैंका गया है। फिर क्या? पुत्र का नाम, उसकी उम्र, उसकी बीमारी ,घर का पता, सब कुछ बता दिया। फिर तो इलाज के लिए दवाई-बूटी भी बतानी शुरू कर दी।

सौंधे खां ने सारी बात हाकम को बताई। उसने भाई बिधी चन्द को महलों में बुला लिया। हाकम ने घोड़े के बारे में पूछा। वही जंजीर वाली अैकटिंग करके सारी घटना हू-ब-हू ब्यान कर दी। बताने का तरीका ऐसा था कि बड़े बड़े अैक्टर भी इस तरह की नकल नहीं कर पाते। सूबेदार ने कहा ,'अब घोड़ा कहां है ले जाने वाले का नाम क्या है? उस के पीछे कौन सी ताकत काम कर रही है?... यदि यह बता दे तो मुंह मांगा इनाम देंगे क्योंकि बात अब घोड़े की नहीं रही। अब तो बात शाही महलों में चोरी की है।' भाई बिधी चन्द ने कहा,' इस समय तो यह बताना मुश्किल है। हां, बताया जा सकता है अगर वही समय हो। सारे पहरेदार उसी तरह हों। ताले भी वैसे ही लगे हों। उस घोड़े के स्थान पर यह घोड़ा तैयार हो।' सौंधे खां एक दम बोला, 'उस समय

तो सारे पहरेदार उस घसियारे ने बेहोश कर रखे थे।' भाई बिधी चन्द जी बोले,'व्यवस्था तो सारी वही बनानी पड़ेगी। ताले भी जहां-जहां लगे थे वहीं लगाने पड़ेंगे। हां, आप वहां विराज सकते हो। राजा जी भी वहां विराज सकते हैं।' सूबेदार तो पूर्ण रूप से भाई बिधी चन्द जी द्वारा बिछाए जाल में फंस चुका था। उसने झटपट सहमति दे दी।

वही माहौल पैदा किया गया। अनाएत उल्ला खां के लिए कुर्सी लगाई गई। सौंधे खां पास खड़ा है। भाई बिधी चन्द ने अपनी जंजीर घोड़े के माथे पर छुआ कर नीचे फैंकी। उस के कान में दिलबाग के पास ले जाने की बात कही। फिर जंजीर को उठा कर सूंघा। घोड़े पर काठी डाली और घोड़े पर चढ़ कर तबेले का चक्कर लगाया। दरिया वाली दीवार के पास भी लेकर गया। फिर पास आ कर गुरु जी का ध्यान धर कर बोला, 'घोड़ा दिखाई दे रहा है। केवल जगह की पहचान करनी बाकी है।' फिर तबेले में दो तीन चक्कर लगा कर घोड़े को गर्म किया। चक्कर लगाते- लगाते ऊंचे स्वर में बोला, 'घोड़ा इस समय खड़ा है गुरू हरगोबिन्द साहिब जी के तबेले में। गुरू जी का डेरा है इस समय कांगढ़ देश। मेरा नाम है बिधी चन्द। सिख हूं मैं गुरू जी का।

ताकत है मेरे पीछे गुरू नानक साहिब जी की जोत की। पहला घोड़ा भी मैं ले कर गया था। यह भी मैं ले जा रहा हूं, मुंह मांगे इनाम के रूप में। मुनादी वाला इनाम अभी तेरे सिर कर्ज रहा। भेज देगा तो ठीक, नहीं तो दरगाह में देना पड़ेगा।' इतना कह कर घोड़े को एड़ी लगाई। सूबेदार को घोड़ा बाज की तरह उड़ता ही दिखाई दिया। तबेले में दोनो ने शोर मचाया, पकड़ो-पकड़ो। पर पकड़े कौन?

भाई बिधी चन्द गीले वस्त्र होने के बावजूद भी माघ महीने की सर्दी की परवाह ना करते हुए, गुरबाणी शब्द गायन करता हुआ उड़ा जा रहा था:

आसा महला 5

'अपने सेवक की आपे राखै आपे नाम जपावै॥

जह जह काज किरत सेवक की तहा तहा उठ धावै'॥ {पावन अंग 403 }

हरी के पत्तण से आगे भाई बिधी चन्द एक सिख के घर जा कर रुके। 'गुलबाग की मालिश की। अगले दिन वह गुरू साहिब जी के पास पहुंचे। दीवान की समाप्ति हो चुकी है। कुछ संगत जा चुकी है और कुछ संगत मिलने के लिए बैठी है। गुरू जी भाई जोध के साथ भाई बिधी चन्द की ही बातें कर रहे हैं। सेवक ने आ कर बताया कि भाई जी घोड़ा ले कर आ गये हैं। गुरू साहिब जी खुद उठ कर बाहर गये। भाई बिधी चन्द को गले लगाया और बचन किये :

'भाई बिधी चन्द छीना, गुरू का सीना।

प्रेम भगत लीना, कोई कमी ना।'

फिर गुलबाग को हाथ फेर कर प्यार दिया। 'गुलबाग' को 'दिलबाग' के पास भेज कर भाई बिधी चन्द को आप हाथ से पकड़ कर संगत में ले आये और बचन किये,'भाई बिधी चन्द, तैं बड़े भारी उपकार करे। तेरी सुध बुध बड़ी विचित्र है। तैं खोसड़े तुर्का नूं छल के गुरू घर दी भारी टहल कीती है। तेरी एह कथा जो कोई पढ़े सुनेगा उसनूं सिखी सिदक प्राप्त होवेगा'। {यह बचन ऐतिहासिक ग्रंथ 'तवारीख गुरू खालसा' में दर्ज हैं} भाई बिधी चन्द ने बहुत नम्रता से विनती की,'सच्चे पातशाह- सब आपजी का प्रताप है। आप जी की कृपा बिना यह तुच्छ जीव क्या कर सकता था। अगर तुर्कों को छला तो आप जी की माया से। घोड़े लेकर आया तो आप जी के प्रताप से। मुझे तो केवल आप जी ने बीच में बहाना बना रखा है। आप की शक्ति अनंत है। सब कुछ करवाने वाले आप हो। यह जो कुछ भी हुआ है, यह सब आप जी का ही खेल है। फिर घन गुरु अरजन देव जी की बाणी में से कुछ लाइनों को उच्चारण कियाः

करण करावनहार सुआमी॥

सगल घटा के अंतरजामी॥ {पावन अंग 178 }

भाई बिधी चन्द जी की घोड़े लाने वाली वार्ता की तरह ही मुगलों द्वारा संगत से जबरदस्ती छीने दुशाले और गहने भी गुरु साहिब जी की कृपा से वापिस ले आए थे। गुरु साहिब जी के ऊपर पठानों और मुगलों द्वारा जबरदस्ती थोपे गये युद्धों में भी भाई बिधी चन्द जी ने बेमिसाल करतब दिखाए।

मालवे और करतारपुर के युद्ध के बाद गुरु साहिब जी ने प्रचार की ओर ज्यादा ध्यान देना चाहते थे। इस लिए डेरा श्री कीरतपुर साहिब में किया। कीरतपुर साहिब जाते समय धन गुरु हरगोबिन्द साहिब जी ने अपने चरण नगर इकोलाहा में डाल कर नगर को पवित्र किया। इस के बाद गुरु हरगोबिन्द साहिब जी ने शौंटी गांव में जा कर विश्राम किया। {ज्ञानी ज्ञान सिंघ जी द्वारा रचित ग्रंथ तवारीख गुरु खालसा}

धन गुरु हरगोबिन्द साहिब जी भाई बिधी चन्द जी को अपने पुत्रों की तरह प्यार करते थे। एक बार भाई सुभाग जी ने पांच इराकी घोड़े भेंट किये। गुरु जी ने एक घोड़ा बाबा गुरदिता जी को, एक भाई सूरज मल जी को और एक भाई बिधी चन्द जी को दे दिया। दो घोड़े अपने लिए रखे। पुत्रों की गलतियों की तरह से ही उनकी गलतियों को भी गुरु साहिब जी माफ कर देते थे। एक दिन शाम के समय गुरु साहिब जी अपनी मौज में एक इराकी घोड़े पर इराकी पोशाक पहन कर कलगी सजा कर और बाज लेकर सैर करने चल पड़े। भाई बिधी चन्द जी गुरु जी के इस रुप को देख कर मन्त्र-मुगघ हो गये। वह मुसॅवर {लकड़ी के ऊपर मूर्तियां बनाने वाला} को साथ लेकर आए। सैर करते हुये गुरु जी को ढूंढ कर मुसॅवर को गुरु जी के इस रुप में मूर्ति बनाने की विनती की। कुछ ही दिनों में उस ने मूर्ति बना कर भाई बिधी चन्द जी को दे दी। भाई बिधी चन्द जी ने मूर्ति गुरु साहिब जी को दिखाई। गुरु जी मुसॅवर की कला से प्रसन्न हुये। भाई बिधी चन्द जी की भावना को समझते हुये उनके साथ कोई नाराज़गी ज़ाहर ना की बल्कि गुरसिखी सिद्धान्तों के बारे में बताते हुये उनको आगे से ऐसा ना करने के लिए कहा। भाई बिधी चन्द जी के माफी मांगने पर ना केवल उनको माफ ही किया बल्कि वह मूर्ति भी भाई बिधी चन्द को दे दी। आज भी यह मूर्ति गांव सुरसिंघ में भाई बिधी चन्द जी के डेरे पर मौजूद है। संगतों को महीने में एक बार इस के दर्शन करवाये जाते हैं।

पीर बुड्ढण शाह का एक चेला सुंदर शाह, देओ नगर, जो कि अयोध्या के नज़दीक है, में पीर की गद्दी का प्रचार करता था। वहां उस को बहुत लोग मानते थे। कई नवाब और अमीर अहलकार उसके श्रद्धालु थे। एक बार वह अपने गुरु पीर, बुड्ढण शाह जी के स्थान पर कीरतपुर साहिब आया। यहां आ कर उस को पता चला कि धन गुरु हरगोबिन्द जी ने स्वयं यहां बैठ कर पीर जी की समाधि बनवाई है। वह शुकराना करने के लिए गुरु साहिब जी के पास आया। उस समय दीवान सजा हुआ था। गुरु साहिब जी संगत को आप सम्बोधन कर रहे थे। दीवान की समाप्ति के बाद उस की गुरु साहिब जी के साथ चर्चा हुई। फिर उस को लंगर छकाया गया। वह सिख मत के प्रचार, लंगर प्रथा, सादगी और सब धर्मो के प्रति सत्कार को देख कर इतना प्रभावित हुआ कि उसने गुरु जी से विनती की कि उसे भी अपना सिख बना लो। इस दौरान भाई बिधी चन्द जी के साथ उस को स्नेह हो गया। दोनो ज्ञान चर्चा में इतने मग्न हो जाते कि उनको समय

का ध्यान ही ना रहता। ऐसे ही मस्ती के पलों में वह एक दूसरे के साथ प्रण कर बैठे कि हम अपना शरीर एक ही समय, एक ही स्थान पर इकट्ठे ही छोड़ेंगे। भाई सुंदर शाह कई महीने तक गुरु साहिब जी के पास कीरतपुर साहिब रहा। गुरु जी ने आशीर्वाद दे कर उसे देओ नगर भेज दिया और सिख धर्म का प्रचारक बनाया।

समय बीतता गया। भाई बिधी चन्द सेवा सिमरन में जुड़े रहे। ब्रह्मज्ञानता की अवस्था में वह थे ही। अपना अंतिम समय नज़दीक जान के उन्हों ने भाई सुन्दर शाह जी के साथ किये प्रण के बारे में गुरु साहिब जी को बताया और देओ नगर जाने की आज्ञा मांगी। गुरु साहिब जी ने प्रवानगी दे दी। साथ ही हुक्म किया कि जितनी देर देह रुपी चोला है, उतनी देर सिखी का प्रचार करना है। विदाई के समय जब वह गुरु साहिब जी को मिले, तब भाई बिधी चन्द जी तो अपने नेत्रों के जल से गुरु साहिब जी के चरण धो ही रहे थे, खुद गुरु साहिब जी के नेत्रों में भी जल उतर आया। गुरु साहिब जी के नज़दीकी सिखों ने गुरु हरगोबिन्द साहिब जी नेत्रों में आज दूसरी बार जल देखा था। पहली बार बाबा बुड्ढा जी की अंतिम विदाई के समय और दूसरी बार भाई बिधी चन्द को विदा करते समय। कुछ समय इसी तरह बैराग्य की अवस्था में ही रहे फिर फुरमाया,''भाई बिधी चन्द जी, कोई तेरे मेरे विच भेद मन्नेगा, उस नूं सिखी सिदक प्रापत ना होवेगा। करतार की आज्ञा इसी तरहां है, सो खुशी पालणी चाहीदी है।'' गुरु साहिब जी और सारी संगत भाई बिधी चन्द जी को काफी दूर तक छोड़ने गये।

देओ नगर को जाते समय रास्ते में भाई बिधी जी जहां भी पड़ाव करते तो 4-5 दिन रुक कर सिखी का प्रचार करते। सिखी मार्ग पर संगतों को चलना सिखाते। देओ नगर में भी सिखी का बहुत प्रचार किया। माहौल तो भाई सुन्दर शाह जी ने पहले ही तैयार किया हुआ था। सारी संगत को दोनों के द्वारा किये हुये प्रण के बारे में भी पता था। आखिर वह दिन भी आ गया। इतिहास ने यह भी देखा कि भाई बिधी जी और भाई सुन्दर शाह जी ने एक ही समय, एक ही स्थान पर अपना देह रुपी चोला छोड़ा और अकाल पुरख के चरणों में जा बिराजे। यह दिन था 15 अगस्त, 1638 ईः का {भादों सुदी 3 सम्मत् 1695} आज कल देओ नगर में एक ही जगह भाई बिधी चन्द जी की समाधि और भाई सुन्दर शाह जी की कब्र बनी हुई है। भाई काहन सिंघ जी नाभा ने यह भी लिखा है कि भाई बिधी चन्द जी के भाई उधी चन्द के पुत्र भाई लाल चन्द जी ने देओ नगर से भाई बिधी चन्द जी की समाधि से मिट्टी ला कर एक समाधि गांव सुरसिंघ में भी बना दी।

सिख इतिहास में भाई बिधी चन्द जी सर्व गुण सम्पन्न होने के कारण अपनी मिसाल आप ही हैं। गुरबाणी के साथ प्यार इतना कि या तो गुरबाणी याद करते या गायन करते ही दिखाई पड़ते। दिलेरी और जुअरत इतनी कि वेश बदल कर तुर्कों की फौज में जा कर छापा मार आते।

हाज़िर दिमागी इतनी कि पल-क्षण में ही योजना बना लेते। नाटक कला इतनी कि शाही तबेले में महीना भर रहने के बावजूद भी दूसरी बार कोई पहचान ना सका। सिदक और भरोसा इतना कि गुरू जी को सदा अंग-संग समझते। नम्रता इतनी कि बलशाली होते हुए भी अपने आप को कीट {कीड़ा} समझते। परिवर्तन इतना कि एक चोर डाकू से ब्रह्मज्ञानी बने। ब्रह्मज्ञानी इतने कि अपना अंतिम समय तो कई महांपुरुष जान लेते हैं पर दूसरे के अंतिम समय को जानना तो ब्रह्मज्ञानता की हद है।

प्यार के साथ बोलो जी :

धन गुरू हरगोबिन्द साहिब जी।

धन भाई बिधी चन्द जी।

****

इतिहास और गुरमत के बारे में प्रश्न उत्तर

प्रश्नः सिख धर्म के संस्थापक कौन थे। उनका प्रकाश कब और कहां हुआ?

उत्तरः सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक देव जी थे। उन का प्रकाश राए भोए की तलवंडी {अब ननकाणा साहिब, पाकिस्तान} में हुआ।

प्रश्नः सिखों के दूसरे गुरु साहिब कौन थे? उनका प्रकाश कब और कहां हुआ? उनका पहला नाम क्या था?

उत्तरः सिखों के दूसरे गुरु साहिब का नाम गुरु अंगद देव था। उनका प्रकाश 1504 ईः को गांव मत्ते की सरां में हुआ, जो कि अब जिला मुक्तसर में है। उनका पहला नाम भाई लहणा जी था।

प्रश्नः सिखों के तीसरे गुरु साहिब कौन थे? उनका प्रकाश कब और कहां हुआ?

उत्तरः सिखों के तीसरे गुरु साहिब का नाम गुरु अमर दास जी था। उनका प्रकाश 1479 ईः को गांव बासरके गिलां में हुआ, जो कि अब जिला अमृतसर में है।

प्रश्नः सिखों के चौथे गुरु साहिब कौन थे? उनका प्रकाश कब और कहां हुआ? उनका पहला नाम क्या था?

उत्तरः सिखों के चौथे गुरु साहिब का नाम गुरु राम दास जी था। उनका प्रकाश 1534 ईः को चूना मंडी लाहौर में हुआ जो अब पश्चिमी पंजाब, पाकिस्तान में पड़ता है। उनका पहला नाम भाई जेठा जी था।

प्रश्नः सिखों के पांचवें गुरु साहिब कौन थे? उनका प्रकाश कब और कहां हुआ?

उत्तरः सिखों के पांचवें गुरु साहिब का नाम गुरु अरजन देव जी था। उनका प्रकाश 1563 ईः को श्री गोइंदवाल साहिब में हुआ जो अब जिला तरनतारन में आता है।

प्रश्नः सिखों के छटे गुरु साहिब कौन थे? उनका प्रकाश कब और कहां हुआ?

उत्तरः सिखों के छटे गुरु साहिब का नाम गुरु हरगोबिंद साहिब जी था। उनका प्रकाश 1595 ईः को गुरु की वडाली में हुआ जो अब जिला अमृतसर में पड़ता है।

प्रश्नः सिखों के सातवें गुरु साहिब कौन थे? उनका प्रकाश कब और कहां हुआ?

उत्तरः सिखों के सातवें गुरु साहिब का नाम गुरु हरिराए साहिब जी था। उनका प्रकाश 1630 ईः श्री कीरतपुर साहिब में हुआ जो अब जिला रूपनगर {रोपड़} में आता है।

प्रश्नः सिखों के आठवें गुरु साहिब कौन थे? उनका प्रकाश कब और कहां हुआ?

उत्तरः सिखों के आठवें गुरु साहिब का नाम गुरु हरिकृश्न साहिब जी था। उनका प्रकाश 1656 ईः श्री कीरतपुर साहिब में हुआ। जहां अब गुरुद्वारा शीश महल सुशोभित है।

प्रश्नः सिखों के नौवें गुरु साहिब कौन थे? उनका प्रकाश कब और कहां हुआ?

उत्तरः सिखों के नौवें गुरु साहिब का नाम गुरु तेग बहादुर जी था। उनका प्रकाश 1621 ईः श्री अमृतसर साहिब में हुआ। जहां अब गुरुद्वारा गुरु के महल सुशोभित है।

प्रश्नः सिखों के दसवें गुरु साहिब कौन थे? उनका प्रकाश कब और कहां हुआ? उनका पहला नाम क्या था?

उत्तरः सिखों के दसवें गुरु साहिब का नाम गुरु गोबिन्द सिंघ जी था। उनका प्रकाश 1666 ईः को पटना साहिब, बिहार में हुआ। उनका पहला नाम गोबिन्द राए था।

प्रश्नः सिखों के ग्यारवें गुरु साहिब कौन थे? उनका प्रकाश कब और कहां हुआ?

उत्तरः सिखों के ग्यारवें गुरु साहिब युगो-युग अट्टल श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी हैं। यह मौजूदा गुरु जी हैं और आज भी सिखों के अगवाही कर रहे हैं। इनका पहला प्रकाश 1604 ईः को श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर साहिब में हुआ।

प्रश्नः श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी को कितनी उम्र में गुरुगद्दी प्राप्त हुई और कहां?

उत्तरः श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी को 9 साल की उम्र में श्री आनंदपुर साहिब में गुरुगद्दी की बख्शिश हुई।

प्रश्नः श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी के माता जी और पिता जी का नाम बताओ? उनके माता जी और पिता जी का विवाह कब हुआ था? श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी का प्रकाश उनके विवाह के कितने साल बाद हुआ?

उत्तरः माता गुजर कौर जी और पिता श्री गुरु तेग बहादुर जी। इनका विवाह 1632 ईसवी में हुआ था। श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी का प्रकाश इनके विवाह के 34 साल बाद हुया।

प्रश्नः श्री गुरु तेग बहादुर जी का नानका गांव कौन सा था? इन्होने विद्या किसकी निगरानी में हासिल की और इन्होने कौन से युद्ध में तेग के कमाल दिखाये? उस समय इनकी आयु कितनी थी?

उत्तरः श्री गुरु तेग बहादुर जी की नानी का गांव बकाला था, जो आज कल बाबा बकाला के नाम से मशहूर है। गुरु साहिब जी ने शस्त्र और शास्त्र की विद्या अपने पिता श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी की निगरानी में हासिल की। इन्होने 1634 ईः में छटे गुरु साहिब जी द्वारा लड़े गये करतार पुर के युद्ध में तेग के कमाल दिखाये। उस समय उन की उम्र केवल 14 साल की थी।

प्रश्नः श्री गुरु तेग बहादुर जी की शहीदी कब और कहां हुई? वह कितने समय तक गुरुगद्दी पर बिराजते रहे? उस समय तक इनके द्वारा कितनी बाणी उचारी गई? इन के द्वारा उचारे गये राग का क्या नाम है और यह श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में दर्ज कितने नम्बर का राग है?

उत्तरः श्री गुरु तेग बहादुर जी को दिल्ली के चांदनी चौंक में 1675 ईः को शहीद किया गया। गुरु साहिब जी 11 वर्ष गुरुगद्दी पर सुशोभित रहे। उन्हों ने 59 शब्द और 57 श्लोक उचारे। उन्हों ने जैजवंती राग की रचना की। यह राग श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी का 31वें नम्बर का राग है और आखिरी राग है।

प्रश्नः श्री गुरु हरिकृश्न साहिब जी के माता जी और पिता जी का क्या नाम है? गुरु साहिब जी का यह नाम कैसे रखा गया?

उत्तरः श्री गुरु हरिकृश्न साहिब जी के माता जी का नाम कृश्न कौर और पिता जी का नाम गुरु हरिराए साहिब था। उनका नाम रखते समय 'हरि' पिता जी के नाम से और 'कृश्न' माता जी के नाम लिया गया था।

प्रश्नः श्री गुरु हरिकृश्न साहिब जी को गुरुगद्दी कितनी उम्र में मिली और वह कितने समय तक गुरुगद्दी पर सुशोभित रहे? श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी ने उनके बारे में क्या उचारा एवं वह कौन सी बाणी में दर्ज है?

उत्तरः श्री गुरु हरिकृश्न साहिब जी गुरुगद्दी पर केवल 5 साल की उम्र में 1661 ईः को बिराजे। केवल 3 साल वह गुरु पदवी पर रह कर 1664 ईः में ज्योति-जोत समा गये। श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी ने उनकी शख्सियत के बारे में उच्चारण किया,'श्री हरिकृश्न धियाईऐ जिस डिठै सभ दुख जाए।।' यह पंक्ति दशम-पिता जी की रचित बाणी 'चण्डी की वार' का मंगलाचरण है और गुरसिखों द्वारा की जाने वाली अरदास का पहला बंद है।

प्रश्नः श्री गुरु हरिकृश्न साहिब जी के ज्योति-जोत समाने से पहले वहां मौजूद संगत ने उनके सुन्दर मुखड़े से 'बाबा बकाले' का उच्चारण सुना, इन दो शब्दों का क्या अर्थ है?

उत्तरः इन दो शब्दों का अर्थ है कि 'बकाले' नगर में निवास कर रहे श्री तेग बहादुर जी, जो रिश्ते में उनके 'बाबा जी' लगते हैं, वह सिखों के अगले गुरु साहिब होंगे।

प्रश्नः श्री गुरु हरिराए साहिब जी सिखों के कितने नम्बर पर आने वाले गुरु थे? उनके माता जी और पिता जी का नाम बताओ? गुरुगद्दी पर वह कितनी उम्र मे सुशोभित हुए और कितना समय बिराजमान रहे?

उत्तरः श्री गुरु हरिराए साहिब जी सिखों के सातवें गुरु साहिब जी थे? उनके माता जी का नाम निहाल कौर जी और पिता जी का नाम बाबा गुरदित्ता जी था। गुरु हरगोबिन्द साहिब

जी ने उन को 14 साल की उम्र में 1644ईः को गुरुगद्दी सोंपी। वह 17 साल गुरुगद्दी पर सुशोभित रहे।

प्रश्नः श्री गुरु हरिराए साहिब जी ने सिखी के प्रचार और प्रसार के लिए कौन-कौन से विशेष प्रयत्न किये?

उत्तरः 1. उन्होंने श्री गुरु नानक साहिब जी के सिखी उपदेशों का प्रचार करने के लिए माझे, मालवे और दुआबे के इलाकों का दौरा किया।

2. सिखी के प्रचार के लिए तीन केंद्र स्थापित किये। जिन के नाम थेः सुथरे शाही केंद्र, भगत भगवानीये केंद्र और संगत साहिबीए केंद्र।

3. आपजी ने श्री कीरतपुर साहिब में दवाई वाले पौधों और जड़ी बूटिओं का बाग लगवाया और एक दवाखाना भी खोला जहां किसी भी घर्म से आए रोगीओं का बिना किसी भेद भाव के इलाज किया जाता था।

4. बड़े गुरु साहिब जी की बाणी बदलने और सिखी सिद्धान्तों के उल्ट जा कर करामात दिखाने वाले अपने बड़े पुत्र राम राए को सदा के लिए माथे ना लगने का हुक्म दे कर आगे आने वाली पीढ़िओं के लिए यह मर्यादा बांघी कि गुरु नानक साहिब जी की सिखी नियमों को तोड़ने वालों को सिख घर्म में कभी भी बख्शा नहीं जायेगा, चाहे वह किसी भी पदवी पर हो।

प्रश्नः श्री गुरु हरिगोबिन्द साहिब जी के माता जी और पिता जी का क्या नाम था? गुरुगद्दी पर कब, कितनी उम्र में सुशोभित हुए और कितने समय तक गुरुगद्दी पर बिराजते रहे? उनको मीरी और पीरी के मालिक क्यों कहा जाता है?

उत्तरः श्री गुरु हरिगोबिन्द साहिब जी के माता जी का नाम माता गंगा जी और पिता जी का नाम गुरु अरजन देव जी था। 25 मई, 1606 ईः को 11 साल की उम्र में गुरुगद्दी पर बिराजे और 1644 ईः तक 38 साल गुरु पदवी पर बिराजमान रहे। भक्ति और शक्ति की दो तलवारें पहनने के कारण उनको मीरी और पीरी के मालिक कहा जाता है।

प्रश्नः श्री गुरु हरिगोबिन्द साहिब जी के कितने बच्चे थे? उनके नाम बताओ?

उत्तरः श्री गुरु हरिगोबिन्द साहिब जी के पांच सपुत्र और एक सपुत्री थी। सपुत्रों के नाम बाबा गुरदित्ता जी, श्री सूरज मल जी, श्री अणी राय जी, बाबा अटल राय जी और गुरु तेग बहादुर जी थे और सपुत्री का नाम बीबी वीरो जी था।

प्रश्नः श्री गुरु हरिगोबिन्द साहिब जी ने कितने किले बनवाए?

उत्तरः श्री गुरु हरिगोबिन्द साहिब जी ने एक किला श्री अमृतसर साहिब में बनवाया, इसका नाम लोहगढ़ का किला है।

प्रश्नः जुल्म और ज़बर के विरुद्ध श्री गुरु हरिगोबिन्द साहिब जी ने कितने युद्ध किये और कहां कहां?

उत्तरः श्री गुरु हरिगोबिन्द साहिब जी ने जुल्म और ज़बर के विरुद्ध 4 युद्ध किये। पहला युद्ध श्री अमृतसर साहिब में, दूसरा श्री हरिगोबिन्दपुर, जिला गुरदासपुर में, तीसरा गुरुसर महराज जिले बठिन्डा में और चौथा युद्ध करतारपुर जिला जालन्धर में।

प्रश्नः श्री गुरु अरजन देव जी के माता जी और पिता जी का क्या नाम था? उनके कितने भाई थे? उनके नाम क्या थे?

उत्तरः श्री गुरु अरजन देव जी के माता जी का नाम बीबी भानी जी और पिता जी का नाम गुरु रामदास जी था। इन के दो बड़े भाई थे, जिन के नाम बाबा प्रिथी चन्द और बाबा महां देव जी था।

प्रश्नः श्री गुरु अरजन देव जी को गुरगद्दी की बख्शिश कब हुई? उस समय उनकी उम्र कितनी थी? कितने समय तक गुरुगद्दी पर सुशोभित रहे?

उत्तरः श्री गुरु अरजन देव जी को गुरु रामदास जी ने 1581 ई: में गुरुगद्दी की बख्शिश की। उस समय उनकी उम्र 18 साल 4 महीने थी। गुरु अरजन देव जी 24 साल 9 महीने गुरु पदवी पर बिराजमान रहे।

प्रश्नः श्री गुरु रामदास जी के माता जी और पिता जी का क्या नाम था? उन्हों ने अपना बचपन कहां गुज़ारा और क्यों?

उत्तरः श्री गुरु रामदास जी के माता जी का नाम दया कौर जी और पिता जी का नाम श्री हरिदास जी था। उनको अपना बचपन गांव बासरके में अपनी नानी जी के पास गुजारना पड़ा क्योंकि उनके माता जी और पिता जी उनके बचपन में ही प्रभु को प्यारे हो गये थे।

प्रश्नः श्री गुरु रामदास जी को गुरगद्दी की बख्शिश कब और कहां हुई? उस समय उनकी उम्र कितनी थी? कितने समय तक गुरुगद्दी पर सुशोभित रहे?

उत्तरः श्री गुरु रामदास जी को श्री गोइंदवाल साहिब में 1574 ईः में गुरुगद्दी की बख्शिश हुई। उस समय उनकी उम्र 40 साल थी। गुरु राम दास जी 7 साल गुरु पदवी पर बिराजमान रहे।

प्रश्नः श्री गुरु राम दास साहिब जी की कितनी बाणी, कितने रागों मे श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज है?

उत्तरः श्री गुरु रामदास जी ने 30 रागों बाणी के उच्चारण किया जो 679 शब्दों के रुप में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज है।

प्रश्नः श्री गुरु अमर दास जी के माता जी और पिता जी का क्या नाम था? वह कहां रहते थे और क्या करते थे?

उत्तरः श्री गुरु अमर दास जी के माता जी का नाम माता सुलखणी जी और पिता जी का नाम श्री तेजभान जी था। वह बासरके गिल्लां में रहते थे और गुजरान के लिये खेतीबाड़ी और दुकानदारी करते थे।

प्रश्नः श्री गुरु अमर दास जी का विवाह कब और किसके साथ हुआ? उनके कितने बच्चे थे? उनके नाम बताओ?

उत्तरः श्री गुरु अमर दास जी का विवाह 1502 ईः में बीबी राम कौर जी के साथ हुआ। उनके 4 बच्चे थे। दो सपुत्र बाबा मोहन जी और बाबा मोहरी जी थे। दो सपुत्रियां बीबी दानी जी और बीबी भानी जी थी।

प्रश्नः श्री गुरु अमर दास जी को गुरगद्दी की बख्शिश कब और कहां हुई? उस समय उनकी उम्र कितनी थी? कितने समय तक गुरुगद्दी पर सुशोभित रहे?

उत्तरः श्री गुरु अमर दास जी को श्री खडूर साहिब में 1552 ईः में गुरुगद्दी प्राप्त हुई। उस समय उनकी उम्र 73 साल थी। गुरु साहिब जी 22 साल 5 महीने गुरु पदवी पर बिराजमान रहे।

प्रश्नः श्री गुरु अमर दास जी ने सिखी के प्रचार और विस्तार के लिए कौन कौन से काम किये?

उत्तरः श्री गुरु अमर दास जी ने सिखी के प्रचार और विस्तार के लिए पूरे देश के इलाकों के हिसाब से 22 मंझीओं की स्थापना की। मंझीओं का भाव था -धर्म प्रचार के केन्द्र स्थापित करना। इन मंझीओं के बाद जब सिखों की गिनती बहुत बढ़ गई और गुरु साहिब जी ने अधिक प्रचारकों की ज़रुरत महसूस की तो 52 पीड़ों की स्थापना की।

प्रश्नः श्री गुरु अमर दास जी ने समाज में फैली हुई कुरीतियों को दूर करने के लिए कौन कौन से काम किये?

उत्तरः श्री गुरु अमर दास जी ने समाज में ऊँची जातियों द्वारा फैलाई गई कई बुराइयों को दूर करने के लिए यह प्रयत्न किये:

1. गुरु साहिब जी के दर्शन करने के लिए आने वाली संगत के लिए यह ज़रुरी कर दिया गया कि पहले एक पंक्ति में बैठ कर लंगर छको तो ही गुरु जी के दर्शन हो सकेंगे। ''पहले पंगत पाछै संगत'' के इस सिद्धांत के कारण हर अमीर-गरीब और ऊँची-नीची जाति के लोगों को एक ही स्थान पर भोजन करवाया जाता था। ऐसा करने से जाति पाति और अमीरी गरीबी का भेद भाव खत्म हो गया।

2. उन के समय ऊँची-नीची जातियों के लिए अलग अलग कुएँ थे। गुरु साहिब जी ने श्री गोइंदवाल में एक बाउली का निर्माण करवाया, जहां हर कोई बिना भेदभाव से स्नान भी कर सकता था और पानी भी भर सकता था।

3. उस समय समाज में 'सती प्रथा' को खत्म करने के लिए गुरु साहिब जी ने बहुत प्रचार किया। अपने सिख सेवकों को विधवा विवाह के लिए प्रेरित किया। अपनी बाणी के एक श्लोक में असली सतियों के बारे में जानकारी दी,'' सतियां एह न आखिअन जो मड़ीयां लग जलन्न।। नानक सतियां जाणीअन जे बिरहे चोट मरन्न।। {पावन अंग 797}

4. घूँघट की रस्म को खत्म करने के लिए विशेष प्रयत्न किए। संगत में आने वाली हर औरत को यह हुक्म था कि वह घूँघट निकाल कर ना आये।

प्रश्नः श्री गुरु अमर दास जी की कितनी बाणी, कितने रागों मे और किस रुप में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज है?

उत्तरः श्री गुरु अमर दास जी ने 17 रागों में बाणी का उच्चारण किया जो 907 शब्दों के रुप में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज है। इस के इलावा रामकली राग में 'आनन्द साहिब' जी के बाणी भी उन्होंने उचारी।

प्रश्नः श्री गुरु अंगद साहिब जी के माता जी और पिता जी का क्या नाम था? वह कहां रहते थे और क्या काम करते थे?

उत्तरः श्री गुरु अंगद साहिब जी के माता जी का नाम दया कौर जी और पिता जी का नाम भाई फेरु मल जी था। वह नगर खडूर साहिब में रहते थे और गुजरान के लिये दुकानदारी करते थे।

प्रश्नः श्री गुरु अंगद देव जी की कितनी बाणी, कितने रागों में और किस रुप में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज है?

उत्तरः श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में 10 रागों में 63 श्लोकों के रुप में दर्ज है।

प्रश्नः श्री गुरु अंगद देव जी का विवाह कब और किसके साथ हुआ? उनके कितने बच्चे थे? उनके नाम बताओ?

उत्तरः श्री गुरु अंगद देव जी का विवाह 1504 ईः में माता खीवी जी के साथ हुआ। उनके 4 बच्चे थे। दो सपुत्र श्री दातू जी और श्री दासू जी थे। दो सपुत्रियां बीबी अमरो जी और बीबी अनोखी जी थीं।

प्रश्नः श्री गुरु अंगद देव को गुरगद्‌दी की बख्शिश कब और कहां हुई? उस समय उनकी उम्र कितनी थी? वह कितने समय तक गुरुगद्‌दी पर सुशोभित रहे?

उत्तरः श्री गुरु अंगद देव जी को श्री करतारपुर साहिब में {अब पाकिस्तान में} 1539 ईः में गुरुगद्‌दी प्राप्त हुई। उस समय उनकी उम्र 35 साल थी। गुरु साहिब जी 13 साल गुरुगद्‌दी पर सुशोभित रहे।

प्रश्नः श्री गुरु नानक देव जी का विवाह कब और किसके साथ हुआ? उनके कितने बच्चे थे? उनके नाम बताओ?

उत्तरः श्री गुरु नानक देव जी का विवाह 1487 ईः में माता सुलखणी जी के साथ हुआ। उस समय उनकी उम्र 18 साल थी। उनके दो सपुत्र थे। बाबा श्री चन्द जी और श्री लखमी दास जी थे।

प्रश्नः श्री गुरु नानक देव को गुरगद्‌दी की बख्शिश कब और कहां हुई? उस समय उनकी उम्र कितनी थी? वह कितने समय तक गुरुगद्‌दी पर सुशोभित रहे?

उत्तरः श्री गुरु नानक देव जी अपने प्रकाश के समय से ही अर्थात 1469 ईः से ही गुरु पद पर सुशोभित थे। गुरबाणी अनुसार वह 'आप नारायण' थे। श्री गुरु ग्रंथ में अनेकों प्रमाण हैं कि गुरु और परमेसर में कोई भेद नहीं है। पावन अंग 864 पर 'गुर परमेसर एको जाण' का उपदेश है। भाई गुरदास जी ने अपनी 29वीं वार में दर्ज किया है,'' गुर परमेसर इक जाण गुरमुख दूजा भाओ मिटाया।।'' गुरु नानक देव जी 1539 ईः तक 70 साल गुरुगद्‌दी पर सुशोभित रहे।

प्रश्नः श्री गुरु नानक देव की कितनी वारें श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज हैं और वह कितने पावन अंग पर दर्ज हैं?

उत्तरः श्री गुरु नानक देव जी की 3 वारें श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज हैं और जिन के नाम और आरम्भ होने के पावन अंग इस तरह हैंः- पहली माझ की वार पावन अंग 137 से, दूसरी आसा की वार पावन अंग 462 से और तीसरी मलार की वार पावन अंग 1278 से आरम्भ।

प्रश्नः श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में कितनी वारें दर्ज हैं और कौन कौन से गुरु साहिबान जी ने कितनी वारों की रचना की है?

उत्तरः श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में 22 वारें दर्ज हैं। गुरु नानक साहिब जी की 3, गुरु अमर दास साहिब जी की 4, गुरु राम दास साहिब जी की 8, गुरु अरजन देव साहिब जी की 6 और एक वार भाई सत्ता जी और भाई बलवंड जी की है।

प्रश्नः श्री गुरु अंगद देव के प्रमुख्य कामों के बारे में बताओ?

उत्तरः श्री गुरु अंगद देव जी ने गुरु नानक साहिब जी के मिशन को और अधिक ऊँचाई पर ले जाने के लिए पंजाबी भाषा लिखने के लिए गुरमुखी लिपि बनाई। अपनी सुपत्नी माता खीवी जी को हाथ में कलछा पकड़ा कर 'लंगर दौलत' बांटने का आदेश दिया। सेहत के सम्बन्ध में विशेष रुप से जागरुक किया और नौजवानों की कुश्तियों के लिए मल्ल अखाड़ों का निर्माण करवाया।

प्रश्नः सिख रहत मर्यादा अनुसार गुरमता किस को कहा जाता है?

उत्तरः श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की हजूरी में पांच सिंघ साहिबान सिखी सिद्धांतों को मध्य नज़र रखते हुये गुरु पंथ की भलाई के लिए जो मते पास किये जाते हैं, उनको गुरमता कहा जाता है।

प्रश्नः गुरुद्वारा किस को कहा जाता है?

उत्तरः सिखों का धर्म स्थान जहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश होता है और गुरु साहिबान द्वारा दिए गये उपदेशों और सिद्धांतों के प्रचार होता है, उसी को गुरुद्वारा साहिब कहा जाता है। भाई काहन सिंघ जी नाभा के महानकोश अनुसार सिखों का गुरुद्वारा विद्यार्थीओं के लिए स्कूल, आत्म जिज्ञासुओं के लिए ज्ञान का उपदेश देने वाला अध्यापक, रोगियों के

लिए दवाखाना, भूखों के लिए अन्नपूर्णा, स्त्री जाति की पत्त {इज्जत} बचाने के लिए लोहमही दुर्ग {किला} और मुसाफिरों के लिए विश्राम का स्थान है।

प्रश्नः कड़ाह प्रशाद को पांच अमृत कड़ाह प्रशाद क्यों कहते है?

उत्तरः क्योंकि कड़ाह प्रशाद को तैयार करने के लिए 5 चीज़ों की ज़रुरत पड़ती हैः पहला देसी घी, दूसरा आटा, तीसरा चीनी, चौथा पानी और पांचवां अग्नि।

प्रश्नः श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का एक स्वरुप अरबी भाषा में लिख कर अरब देश में भेजा गया था, जो कि आज कल बरकले यूनिवर्सिटी में मौजूद है, उसके लेखक कौन थे?

उत्तरः धन धन बाबा दीप सिंघ जी।

****

गुरू अरजन साहिब जी द्वारा उच्चारण की गई कुल बाणी

पंचम पातशाह गुरू अरजन साहिब जी ने धन श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी में 30 रागों में बाणी की रचना की, जिस का विवरण निम्नलिखित है-

- कुल शब्द :1345
- कुल अष्टपदियां :62
- कुल वारें :6
- कुल छंद :63
- कुल श्लोक :290
- कुल श्लोक सहसकृिती :67
- कुल पौड़ियां :117

इनके इलावा गुरू साहिब जी ने विशेष बाणीयों की भी रचना की है-

- सुखमनी साहिब
- बारह माह मांझ
- बावन अखरी
- गुणवंती
- सोलहे
- अंजुलियां
- फुनहे
- चौबोले
- बिरहड़े
- दिन रैण
- गाथा
- सवईये
- रुति

****

युगो युग अट्टल श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के बारे में क्या हम जानते हैं किः

- श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का पहला नाम पोथी साहिब था।
- पोथी साहिब की संपादना गुरु अरजन देव जी ने की थी।
- पोथी साहिब की सम्पूर्णता 30 अगस्त 1604 ईसवी को हुई।
- पोथी साहिब का पहला प्रकाश बाबा बुड्ढा जी ने 1 सितम्बर,1604 ईसवी को श्री हरिमंदर साहिब में किया था। बाद में नांदेड़ साहिब में श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी द्वारा गुरु पदवी दी गई।
- श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के कुल 1430 पावन अंग हैं।
- श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में 13 प्रादेशिक भाषाओं के इलावा संस्कृत भाषा का प्रयोग किया गया है। परन्तु लिपि गुरमुखी का ही प्रयोग किया गया है।
- श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की मुख्य भाषा पंजाबी है।
- श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में कुल 10,24,000 अक्षर हैं।
- श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में सारी बाणी 31 रागों में दर्ज की गई है।
- श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में 6 गुरु साहिबान जी की बाणी है जिन के नाम श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमर दास जी, श्री गुरु राम दास जी, श्री गुरु अरजन देव जी और श्री गुरु तेग बहादुर जी हैं।
- श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में 15 अलग-अलग जातियों के भक्तों की बाणी है। भक्तों के नाम हैं:- भक्त कबीर जी, भक्त नाम देव जी, भक्त रविदास जी, भक्त त्रिलोचन जी, भक्त धन्ना जी, भक्त सैण जी, भक्त पीपा जी, भक्त सूरदास जी, भक्त फरीद जी, भक्त परमा नन्द जी, भक्त सदना जी, भक्त बेणी जी, भक्त भीखन जी, भक्त जै देव जी, भक्त रामा नन्द जी।
- श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में 4 सिखों की बाणी दर्ज है, जिन के नाम हैं :- रबाबी भाई मरदाना जी, बाबा सुन्दर जी, रबाबी भाई सत्ता जी और रबाबी भाई बलवंड जी।
- श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में 11 भट्ट साहिबान जी की बाणी है:- भट्ट कल्लह सहार जी, भट्ट जालप जी, भट्ट कीरत जी, भट्ट भिखा जी, भट्ट सल्लह जी, भट्ट भल्लह जी, भट्ट बल्लह जी, भट्ट नल्लह जी, भट्ट गयंद जी, भट्ट मथुरा जी, भट्ट हरिबंस जी।
- श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में कुल 5805 शब्द, श्लोक और सवैये हैं।

****

भाई मंझ 'गुरु के लंगर' के लिए लकड़ियां
बाहर निकालते हुये